राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 46 ■ अंक 04 ■ जुलाई 2024 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 40

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक

7,8,9 जून , 2024 सूरत (गुजरात)

युगाब्द ५१२६, ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, द्वितीय, तृतीय

पंच परिवर्तन का संकल्प

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक की झलकियां

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 46, अंक 04
जुलाई 2024

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **अभाविप चलाएगी परिसर चलो अभियान**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) अपनी स्थापना के अमृत महोत्सव को पूरा कर आगामी 9 जुलाई 2024 को अमृत काल में प्रवेश कर रही है। इस अवसर ...

संपादकीय	04
भारतीय इतिहास के वास्तविक तथ्यों को उजागर करने की आवश्यकता	12
परीक्षाओं के कुप्रबंधन और संस्थागत मूल्यांकन पर उठ रहे प्रश्नों का निवारण आवश्यक	15
राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन को दें प्राथमिकता	16
शैक्षिक संस्थानों में युगानुकूल अधोसंरचना निर्माण एवं वित्तीय पोषण बने अभियान	17
विकसित भारत में युवाओं की हो भागीदारी	18
नवनिर्वाचित केंद्र सरकार से जन-अपेक्षाएं	19
समस्याओं के निराकरण के लिए अभाविप ने दिया केंद्रीय मंत्रियों को ज्ञापन	20
आयुष प्रणाली पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और राज्य आरोग्य मेले का आयोजन	21
अभाविप की संकल्पित भारत भक्ति यात्रा	22
विद्यार्थियों के लिए प्रेरक है, श्रीमद्भगवद्गीता का अर्जुन	24
भगिनी निवेदिता व्यक्तित्व विकास शिविर का समापन	27
Pakistan has blocked its access to Central Asia; Dispensing with the Durand Line is the key	28
करगिल के सबक	30
The Impact of Three New Criminal Laws in Bharat	32
छात्रों के लिए निराशा और आक्रोश का कारण बनी राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी	34
नरेन्द्र देव कृषि वि.वि. प्रशासन के विरुद्ध अभाविप का प्रदर्शन	37
विकासार्थ विद्यार्थी ने चलाया सामाजिक अनुभूति अभियान	38

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

अमृत महोत्सव का पड़ाव पार कर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद(अभाविप) भविष्योन्मुख यात्रा पर अग्रसर है। स्वाधीनता पाने के तुरन्त पश्चात जिन युवाओं ने अभाविप की स्थापना की, उनमें से अधिकांश भले ही आज हमारे बीच न हों, किन्तु वह मशाल पीढ़ियों की यात्रा करती हुई आज भी दीप्तिमान है।

जिस युगदृष्टा ने सौ वर्ष पहले देश में राष्ट्रीयता की गंगा को प्रवाहित किया, उनके सामने देश की स्वाधीनता का भी प्रश्न था और उस स्वाधीनता की रक्षा का भी। स्वाधीनता पाने से अधिक महत्वपूर्ण उसे बनाए रखने की चुनौती थी। तत्कालीन वैश्विक शक्तियां जब इस बात की भविष्यवाणी कर रही थीं कि भारत न तो अपनी अखण्डता बचा सकेगा और न ही लोकतंत्र, तब अभाविप और उसके जैसे अनेक समविचारी संगठन स्वाधीनता की रक्षा के उपकरण बन कर सामने आए। आपातकाल का अंधेरा इनकी परीक्षा लेने के लिए आया और स्वाधीन भारत के इतिहास में उनके योगदान का स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ कर तिरोहित हो गया।

वैश्विक शक्तियां भारत के बिखरने की भविष्यवाणी करते समय केवल अपना अनुमान ही नहीं प्रकट कर रही थीं, बल्कि इस बिखराव के लिए निरंतर प्रयासरत थीं। आखिर कोई भी कथित महाशक्ति यह कैसे स्वीकार कर सकती थी कि उसका कोई उपनिवेश अपनी विकास यात्रा में उसे लांघ कर आगे निकल जाए। किन्तु अब यह दीवार पर लिखी इबारत की तरह स्पष्ट है कि अनेक उपनिवेशवादी शक्तियों को पीछे छोड़ भारत विश्वमालिका में अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।

अपनी विकासयात्रा के 75 वर्षों की सम्पूर्ति के अवसर पर अभाविप ने न केवल अपनी यात्रा का सिंहावलोकन किया, अपितु भविष्य के लिए बड़े लक्ष्यों पर भी विचार किया है।

दुर्भाग्य है कि अपने निजी स्वार्थ के कारण इन विरोधी शक्तियों के हस्तक के रूप में कुछ भारतीय भी काम कर रहे हैं। परिसरों में भी इनके समूह सक्रिय हैं जो भारतविरोधी गतिविधियों से वातावरण को विषाक्त करने का प्रयास निरंतर करते हैं। देश के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान भी इससे अछूते नहीं हैं और यहीं से अभाविप के कार्यकर्ताओं की भूमिका प्रारंभ होती है।

'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में शिक्षा क्षेत्र में एक सशक्त छात्र संगठन खड़ा करना', यह लक्ष्य लेकर प्रारंभ अभाविप अपनी इसी भूमिका को अपने स्थापना काल 9 जुलाई 1949 से ही निभाती आ रही है। 'रचनात्मक दृष्टिकोण' तथा 'शैक्षिक परिवार की संकल्पना' के साथ 'दलगत राजनीति से ऊपर' उठकर शिक्षा और परिसर के प्रश्नों पर सतत जागरूक रहते हुए अभाविप ने विद्यार्थियों का नेतृत्व किया है। परिणामस्वरूप इसे विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

अपनी विकास यात्रा के 75 वर्षों की सम्पूर्ति के अवसर पर संगठन ने, न केवल अपनी यात्रा का सिंहावलोकन किया, अपितु भविष्य के लिए बड़े लक्ष्यों पर भी विचार किया है, जिसकी झलक गत राष्ट्रीय अधिवेशन और हाल ही में सम्पन्न हुई राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में मिली है।

भारत विरोधी शक्तियों के षड्यंत्रों का प्रखर विरोध, देश को तोड़ने की कोशिश कर रहे अलगाववादी, आतंकवादी संगठनों का तीव्र वैचारिक प्रतिकार, सामाजिक विभेद उत्पन्न करने वाली प्रवृत्तियों के विरुद्ध छात्र समुदाय और जनसामान्य को जागरूक करने के अपने प्राथमिक कर्तव्य का पालन करते हुए नए आयामों का विस्तार और नए क्षितिज को स्पर्श करने के युवकोचित स्वभाव के अनुकूल गतिविधियों के प्रसार में पूर्व की भांति ही सक्रिय रहने का संकल्प निश्चय ही फलीभूत होगा।

राष्ट्रीय छात्र दिवस की हार्दिक शुभकामना सहित,

आपका
संपादक

अभाविप चलाएगी परिसर चलो अभियान

सूरत में संपन्न राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में हुए महत्वपूर्ण निर्णय

■ अजीत कुमार सिंह

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) अपनी स्थापना के अमृत महोत्सव को पूरा कर आगामी 9 जुलाई 2024 को अमृत काल में प्रवेश कर रही है। इस अवसर पर अभाविप परिसर में छात्रों की कम होती उपस्थिति को बढ़ाने के लिए 'परिसर चलो अभियान' आरम्भ करने जा रही है। एक वर्ष तक चलने वाले अभियान का उद्देश्य परिसर संस्कृति को पुनः विकसित करना है। इसके साथ ही पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर के जन्मोत्सव की त्रिशताब्दी को भी अभाविप धूमधाम से एक वर्ष तक मनाएगी। यह निर्णय गुजरात स्थित सूरत में संपन्न अभाविप की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में लिया गया। गत 7 से 9 जून के मध्य हीरा नगरी के नाम से विख्यात सूरत के माहेश्वरी सदन में आयोजित बैठक में देश भर से 368 कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। बैठक में मित्र राष्ट्र नेपाल के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। कार्यकारी परिषद बैठक में गत वर्ष के कार्यों की समीक्षा की गई, साथ ही आगामी वर्ष में किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा बनाई गई। बैठक का शुभारंभ गत 7 जून को अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष

परिसर चलो अभियान

शैक्षिक परिसरों में छात्रों की घटती संख्या को ध्यान में रखते हुए अभाविप 'परिसर चलो अभियान' चलाएगी। अभियान का उद्देश्य परिसरों को जीवंत बनाना एवं परिसर संस्कृति को पुनर्स्थापित करना है। अभियान के माध्यम से छात्रों को परिसर में आने के लिए प्रेरित किया जाएगा, ताकि वर्ग में विद्यार्थियों की अधिकतम उपस्थिति सुनिश्चित हो। दो चरण में चलाए जाने वाले 'परिसर चलो अभियान' के प्रथम चरण में छात्र संवाद, छात्र संसद, प्रेरक उद्बोधन एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों की परिसरों के प्रति रुचि बढ़ाने एवं परिसरों में छात्रसंघ चुनाव, विद्यालयों में प्रायोगिक कक्षाएं, कला, खेल, सेवा और पर्यावरण संबंधी प्रकल्प के माध्यम से परिसरों में सकारात्मक वातावरण बनाने पर जोर दिया जाएगा। इसी तरह अभियान के द्वितीय चरण में शिक्षा क्षेत्र के सभी हितधारकों से संवाद एवं कार्य करके परिसर को जीवंत बनाने, रोज़गार सृजन का केंद्र बनाने एवं परिसर को रुचिकर बनाने हेतु कैंटीन, खेल प्रांगण तथा छात्र कल्याण केन्द्र जैसी व्यवस्थाओं को उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा। अभियान के दौरान चौपाल, संगोष्ठी, नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन होगा।

70वां राष्ट्रीय अधिवेशन गोरखपुर में

अभाविप का 70वां राष्ट्रीय अधिवेशन उत्तर प्रदेश स्थित गोरखपुर में होगा। सूरत बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार पहली बार गोरखपुर में अभाविप राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जाएगा। अधिवेशन आगामी 22 से 24 नवंबर के मध्य होगा, जिसमें देशभर के कार्यकर्ता हिस्सा लेंगे। अधिवेशन पर आधारित सत्र में पश्चिम क्षेत्र संगठन मंत्री देवदत्त जोशी ने उपस्थित कार्यकर्ताओं से अधिवेशन में किए जाने वाले प्रयोग पर सुझाव मांगे एवं व्यवस्थागत चर्चा की।

डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बैठक के प्रास्ताविक सत्र को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने कहा कि मानव और चित्त के निर्माण में पाठ्यक्रमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में शामिल करना चाहिए। यदि उच्च शिक्षण संस्थानों को जीवंत बनाना है तो पाठ्यक्रमों में वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप बदलाव करने ही होंगे। वर्तमान समय में बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है और पाठ्यक्रमों को जीवंत तथा रोजगारोन्मुख करना होगा। पेपर लीक की घटना पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता की दिशा में परीक्षा की शुचिता की कमी चिंता का कारण है और इस पर रोक लगनी चाहिए। परिसरों में छात्रों की अधिकतम उपस्थिति सुनिश्चित करने की दिशा में उन्होंने कहा कि शिक्षालयों को रचनात्मक और आकर्षक बनाना होगा, जिससे विद्यार्थी अपने सर्वांगीण विकास की दिशा में आगे बढ़ सके। अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक शिक्षा क्षेत्र से जुडे विषयों पर विचार विमर्श द्वारा एक सकारात्मक बदलाव की दिशा दिखाने वाली होगी।

बैठक में अभाविप राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि विद्यार्थी परिषद की कार्यप्रणाली निरंतर नए सूत्रों को समाहित कर समाज-जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की ध्येय यात्रा के साथ आगे बढ़ रही है। लेकिन वामपंथी विचारधारा से जुड़े तत्व, जिन्हें अपने विचारों पर चलने के लिए विवश नहीं कर पाते हैं, उसकी हत्या कर देते हैं। पटना में छात्र नेता हर्ष राज की हत्या और वामपंथी प्रताड़ना के कारण केरल में जे. एस. सिद्धार्थन की असामयिक मृत्यु इसका उदाहरण है। संदेशखाली की घटना पर रोष व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी के हृदय में ममता का वास नहीं है। संदेशखाली में माता-बहनों की आबरू को बचाने के लिए अभाविप ने देश भर में विरोध प्रदर्शन किया, जिससे दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई हुई। देश भर के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में वामपंथी तथा नकारात्मक शक्तियों का

प्रतिकार अभाविप ने छात्रों के साथ मिलकर मुखरता से किया है। शिक्षा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण हितधारक के रूप में छात्रों के मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हुए वर्तमान परिदृश्य में युगानुकूल बदलाव लाने हेतु एक साथ प्रयास करने चाहिए।

बैठक में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत ने नैमित्तिक और विशेष कार्यक्रम समीक्षा सत्र को संबोधित करते हुए अभाविप द्वारा वर्ष भर चलाए गए कार्यक्रमों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने कार्यक्रम से जुड़े विभिन्न तकनीकी पहलुओं से कार्यकर्ताओं को परिचित कराया। साथ ही बैठक में वर्तमान परिदृश्य एवं हमारी भूमिका पर आयोजित सत्र में 'देश की वर्तमान परिदृश्य' पर चर्चा की गई। चर्चा के दौरान क्रिप्टो करंसी से संबंधित घोटालों में युवाओं के फंसने, लोक सभा चुनाव के बाद पश्चिम बंगाल मे हो रही हिंसा, हिमाचल प्रदेश में बढ़ती नशाखोरी, देवगिरी प्रांत में जल संकट, जम्मू-कश्मीर में आतंकी घुसपैठ सहित देश के विभिन्न राज्यों से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श करके समाधान की दिशा में आगे बढ़ने का निर्णय लिया गया।

'शैक्षिक विषयों पर अभाविप की भूमिका' विषय पर आयोजित सत्र में अभाविप राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी द्वारा आयोजित नीट-यूजी परीक्षा में हुई धांधली, विभिन्न परीक्षाओं के पेपर लीक की घटनाएं, नैक मूल्यांकन की प्रक्रिया, प्रवेश में अधिक पारदर्शिता, परिसर एवं कक्षाओं में छात्रों की कम होती उपस्थिति, संस्थागत अनियमितता एवं कुप्रबंधन के साथ ही परीक्षाओं में कदाचार की घटनाओं सहित कुछ राज्यों में राज्य विश्वविद्यालय या उनसे संबंधित महाविद्यालयों की परीक्षा एवं मूल्यांकन पद्धति में बार-बार बदलाव, डीपफेक की बढ़ती घटना जैसे विषय पर चर्चा की।

विविध आयाम गतिविधि योजना पर आयोजित सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री एस. बालकृष्ण ने अभाविप के विभिन्न आयाम एवं गतिविधि के कार्यों से संबंधित आगामी योजनाओं पर चर्चा की। परिषद के जनजाति कार्य सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री गोविंद नायक ने अभाविप द्वारा जनजातीय बहुल क्षेत्र किए जा रहे कार्य, बदलाव, छात्रावास संपर्क इत्यादि विषयों पर विचार-विमर्श किया। इसी तरह छात्रा कार्य विषय पर आधारित सत्र में अभाविप की अखिल भारतीय छात्रा कार्य प्रमुख मनु शर्मा कटारिया ने छात्राओं की सहभागिता, छात्रा कार्य की टोली इत्यादि विषय पर चर्चा की।

बैठक के दौरान अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने पीपीटी के माध्यम से प्रांतशः संगठनात्मक कार्य, गतिविधि, सदस्यता, आंदोलन, कार्यक्रम इत्यादि की समीक्षा की। साथ ही पांच वर्षों की तुलना में प्रांत में इकाई, महाविद्यालय इकाई सदस्यता आदि में प्रांत की वर्तमान स्थिति का अवलोकन किया और प्रांत में इकाई गठन पद्धति, जिला समिति, सदस्यता आदि की योजना पर चर्चा की। उन्होंने इस निमित्त प्रांतवार आंकड़े भी प्रस्तुत किए।

नगर स्तर पर होगा खेल कुंभ का आयोजन

भारत के परंपरागत खेल कुश्ती, अखाड़ा, थांग-ता, कलरीपायट्टु, खो-खो, रस्साकशी, मलखंब, हेक्को, स्टापु, छऊ और पाइका अखाड़ा, कबड्डी, शूटिंग बॉल, लागोरी और लंगडी, गतका, रोल बॉल, धूप और कौड़ी खेल, सिलंबम, तीरंदाजी, गिल्ली-डंडा एवं अन्य देशी खेलों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से अभाविप गतिविधि 'खेलो भारत' के माध्यम से नगर स्तर पर खेल कुंभ का आयोजन करेगी। 'खेलो भारत' के राष्ट्रीय प्रमुख प्रदीप शेखावत ने बताया कि भारत की मिट्टी से जुड़े परंपरागत खेलों को पुनर्जीवित करने के लिए देश भर के नगर स्तर की इकाइयों में खेल कुंभ का आयोजन किया जाएगा। इसमें विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले अधिकतम छात्रों की सहभागिता रहेगी। खेल कुंभ के माध्यम से मैराथन, ऊंची कूद, लंबी कूद, तीरंदाजी, रस्साकस्सी, कुश्ती आदि की प्रतियोगिता कराई जाएगी, जिसमें हिस्सा लेने वाले छात्रों को प्रमाण पत्र, मैडल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया जाएगा।

अहिल्याबाई होल्कर के 300 वें जन्मोत्सव वर्ष पर होंगे कार्यक्रम

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर जन्मोत्सव के 300वें वर्ष के उपलक्ष्य में अभाविप देश भर के विभिन्न शैक्षिक परिसरों में वर्ष भर विविध कार्यक्रमों का आयोजन करेगी। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिसर में संगोष्ठी, भाषण सहित अन्य गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को उनके जीवन चरित्र से परिचित कराया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 31 मई को अहिल्याबाई होल्कर का 300 वां जयंती वर्ष प्रारंभ हो गया है। सूरत बैठक में अभाविप ने उनके जन्म की त्रिशताब्दी के उपलक्ष्य में देश भर में कार्यक्रम करने का निर्णय लिया है। निर्णय के अनुसार अहिल्याबाई के कार्यों एवं विचारों को घर-घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से वर्ष भर कार्यक्रमों की श्रृंखला चलती रहेगी। साथ ही अभाविप के सभी कार्यक्रमों में अहिल्या बाई होल्कर की तस्वीर लगाई जाएगी।

'सेवार्थ विद्यार्थी' आयोजित करेगी 'संवेदना-सेवा इटर्नशिप'

सेवा के क्षेत्र में काम करने वाले अभाविप आयाम 'सेवार्थ विद्यार्थी' द्वारा युवाओं में सेवा भावना को जागृत करने के लिए संवेदना-सेवा इंटर्नशिप का आयोजन किया जाएगा। इसके पोस्टर का विमोचन राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में किया गया। यह इंटर्नशिप दो चरणों में होगी। पहले चरण में सात दिन तथा दूसरे चरण में पंद्रह दिन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। सेवार्थ विद्यार्थी के प्रमुख भवानी शंकर के अनुसार इंटर्नशिप के माध्यम से देश के युवाओं में सेवा की भावना को विकसित किया जाएगा। चयनित छात्रों को सेवा क्षेत्र में काम करने वाली विविध सामाजिक संस्था, गैर सरकारी संगठन के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाएगा। सेवा प्रोजेक्ट के तहत छात्र इंटर्नशिप के दौरान विभिन्न सामाजिक संस्था के कार्यों, अनुभवों, कार्य करने के तरीके इत्यादि के सम्बन्ध में गहन जानकारी हासिल करेंगे। प्रशिक्षण के बाद उन्हें प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाएगा।

तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में गत वर्ष के कार्यों की समीक्षा करने के साथ ही आगामी वर्ष के कार्यक्रमों एवं अभियानों की रूपरेखा निर्धारित की गई। अभाविप ने इस वर्ष 'परिसर चलो अभियान' और 'नगर स्तरीय खेल महोत्सव' कराने का निर्णय लिया है। साथ ही अहिल्याबाई होल्कर जन्मोत्सव के 300 वें वर्ष के उपलक्ष्य पर उनकी कृतियों एवं राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण के भाव को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। शैक्षिक परिसर को आनंदमयी एवं सार्थक बनाने के उद्देश्य से परिसरों में राष्ट्रीय कला मंच के माध्यम से लोक कलाओं का उत्सव एवं प्रतियोगिता आयोजित करने की रूपरेखा को भी अंतिम रूप दिया गया।

बैठक में पंच परिवर्तन पर जोर देते हुए निर्णय लिया गया कि पंच परिवर्तन के माध्यम से अभाविप समरसता, पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली, कुटुंब प्रबोधन, 'स्व' का भाव एवं नागरिक कर्तव्य का बोध कराएगी। उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए आगामी नवंबर माह में अभाविप बेंगलुरु में स्टार्टअप कॉन्क्लेव का आयोजन करेगी। साथ ही छात्राओं को जागरूक और सशक्त करने के लिए चलाए जा रहे ऋतुमती एवं मिशन साहसी का आयोजन देश भर में जारी रहेगा।

सितंबर-अक्टूबर में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में छात्रा संसद, जनजातीय संसद एवं पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद का भी आयोजन किया जाएगा। अभाविप के 70 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन गोरखपुर में होगा, जबकि प्रांत योजना के अनुसार अक्टूबर 2024 से फरवरी 2025 के मध्य विभिन्न प्रांतों में प्रांत अधिवेशन का आयोजन किया जाएगा।

अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में कुल पांच प्रस्ताव पारित किए गए। यह प्रस्ताव 'परीक्षाओं के कुप्रबंधन और संस्थागत मूल्यांकन पर उठ रहे प्रश्नों का निवारण आवश्यक', 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन को प्राथमिकता', 'शैक्षिक संस्थानों में युगानुकूल अधोसंरचना निर्माण एवं वित्तीय पोषण बने अभियान', 'विकसित भारत में युवाओं की हो भागीदारी' और 'नवनिर्वाचित भारत सरकार से जन-अपेक्षाएं' विषयों पर केंद्रित हैं। राष्ट्रीय

एकात्मता को स्थापित करने के लिए 1966 से जारी अंतर-राज्य छात्र जीवन दर्शन यात्रा का आयोजन आगामी जनवरी-फरवरी माह में किया जाएगा। बैठक में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में किए गुणात्मक प्रयोग पर हुई चर्चा के साथ इस तरह के प्रयोग को देश भर में किए जाने पर बल दिया गया। बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुसार आनंदमयी सार्थक छात्र जीवन अभियान वर्ष भर जारी रहेगा, जिसके निमित्त प्रत्येक परिसर में रोचक कार्यक्रम, गतिविधियों एवं चर्चाओं का आयोजन किया जाएगा।

बैठक के दौरान नवंबर' 2023 से अप्रैल' 2024 के मध्य अभाविप द्वारा किए गए विभिन्न कार्यक्रमों, अभियानों एवं आंदोलनों से जुड़े वीडियो का प्रदर्शन किया गया। साथ ही विभिन्न पोस्टर, पुस्तक एवं पत्रिका का विमोचन भी हुआ, जिसमें कॉन्स्टीट्यूशन क्लब पत्रिका, युगदृष्टा विशेषांक, रा.का. परिषद सूरत स्मारिका, संवेदना-सेवा इंटर्नशिप पोस्टर, राष्ट्रीय कला मंच सिंगड़ी कार्यक्रम (तेलगांना) पोस्टर, आषाढीवारी सेवा उपक्रम पोस्टर, छात्र चेतना विशेषांक, भारतीय स्वातंत्र्य समर के जनजातीय नायकों की वीर गाथा, द यूथ डिस्कोर्स मासिक पत्रिका, नेशनल सिम्पोजियम ऑन लैंडमार्क जजमेंट थिंक इंडिया शामिल हैं।

अंतिम दिन 'प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में राष्ट्रीयता के तत्व : धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य' विषय पर सुप्रसिद्ध इतिहासकार मीनाक्षी जैन का उद्बोधन हुआ।

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से पहले 6 जून को सूरत स्थित राजपुरोहित समाज प्रांगण में नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में गुजरात के प्रसिद्ध गरबा नृत्य, डांगी नृत्य आदि कलाओं का प्रदर्शन हुआ। साथ ही गत 6 जून को केन्द्रीय कार्यसमिति, आयाम, कार्य गतिविधि एवं कोषाध्यक्ष की संयुक्त बैठक भी हुई। बैठक का उद्घाटन अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, संगठन मंत्री आशीष चौहान, सह संगठन मंत्री एस. बालकृष्ण, राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद विशेष आंमत्रित सदस्य डा. नागेश ठाकुर ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बैठक में चार सत्र हुए। राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक स्थल के निकट एक प्रदर्शनी

राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा का होगा आयोजन

अभाविप प्रकल्प अंतर-राज्य छात्र जीवन दर्शन (सील) द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा आगामी वर्ष जनवरी-फरवरी में होगी। एकात्मता यात्रा का आयोजन 1966 से किया जा रहा है। यात्रा का उद्देश्य उत्तर-पूर्व के राज्यों को शेष भारत से जोड़ने, उनकी संस्कृति-परंपरा से परिचित एवं एकात्मता स्थापित कराना होता है। यात्रा में हिस्सा लेने वाले छात्र-छात्रा किसी होटल या सराय की जगह, उस स्थान में रहने वाले किसी स्थानीय परिवार के घर में ठहरते हैं। इससे उनका परिवार के साथ जीवन भर का आत्मीय संबंध बन जाता है।

छात्रा, जनजातीय एवं पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद का आयोजन दिल्ली में

नौ वर्ष बाद पुनः राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में छात्रा, जनजातीय एवं पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद का आयोजन होगा। इससे पहले अक्टूबर' 2015 में यह आयोजन दिल्ली में हुआ था। छात्रा संसद में महिलाओं की सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन जैसे विषयों पर मंथन किया जाएगा। छात्रा संसद में देश भर की छात्राओं की भागीदारी होगी। इसी तरह जनजातीय समाज के युवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं स्वालंबन पर विमर्श हेतु जनजातीय संसद का आयोजन होगा, जिसमें जनजातीय बाहुल्य सभी प्रदेशों के प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे। संसद में जनजातीय समाज की संस्कृति, परंपरा, गौरवशाली इतिहास के साथ-साथ उनकी शिक्षा एवं रोजगार पर चर्चा की जाएगी। पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद में पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी राज्यों के छात्र एवं युवा हिस्सा लेंगे। संसद में पूर्वोत्तर की कौशल, संस्कृति, रोजगार, शिक्षा इत्यादि पर चर्चा होगी।

का भी आयोजन किया गया, जिसमें गुजरात नवनिर्माण आंदोलन, छत्रपति शिवाजी के 350वें राज्याभिषेक के उपलक्ष्य पर उनकी जीवन कृति, रानी अहिल्याबाई होल्कर जीवन चरित्र सहित जनजातीय परंपराओं को प्रदर्शित किया गया।

क्षेत्र संरचना में परिवर्तन

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में संगठन कार्य दृष्टिकोण से बनाए गए तीन क्षेत्रों की संरचना में परिवर्तन किया गया। उत्तर क्षेत्र में पहले दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और जम्मू-कश्मीर को रखा गया था। लेकिन अब दिल्ली प्रांत को उत्तर क्षेत्र से हटाकर उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में जोड़ा गया। उत्तर क्षेत्र में अन्य प्रांत यथावत रहेंगे। इसी तरह उत्तर-पश्चिम क्षेत्र से गुजरात को हटाकर पश्चिम क्षेत्र में शामिल किया गया है। उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में अब राजस्थान के तीन प्रांत (जयपुर, जोधपुर एवं चित्तौड़) के साथ ही दिल्ली प्रांत भी होगा। पश्चिम क्षेत्र में अब विदर्भ, पश्चिम महाराष्ट्र, देवगिरी, कोंकण और गुजरात प्रांत होंगे। उत्तरांचल प्रांत अब उत्तराखंड प्रांत के नाम से जाना जाएगा। इसी प्रकार सिक्किम प्रांत को अब सिक्किम-दार्जिलिंग प्रांत का नाम दिया गया है। इसमें कलिमपौंग एवं दार्जिलिंग जिला सम्मिलित होंगे और प्रांत का केन्द्र गंगटोक रहेगा।

अभाविप को मिला जीरो वेस्ट ईवेंट का पुरस्कार

अभाविप द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक को सूरत महानगर पालिका द्वारा जीरो वेस्ट ईवेंट का पुरस्कार प्रदान किया गया है। सूरत महानगर पालिका की आयुक्त शालिनी अग्रवाल ने बैठक की सराहना करते हुए अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही एवं महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल को 'जीरो वेस्ट ईवेंट' का प्रमाण पत्र सौंपा। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ऐसे बड़े आयोजन में भोजन के एक भी कण की बर्बादी न होना, बैठक में कागज एवं प्लास्टिक का उपयोग न करना या न्यूनतम प्रयोग करना सराहनीय कदम है।

नागरिक अभिनंदन समारोह

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से पहले गत 6 जून को 'नागरिक अभिनंदन/सत्कार' समारोह का आयोजन हुआ। समारोह में प्रसिद्ध अभिनेता मनोज जोशी, अभाविप अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, आयोजन की स्वागत समिति के अध्यक्ष लवजीभाई डालिया, स्वागत समिति के मंत्री दिनेशभाई राजपुरोहित, अभाविप गुजरात के प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मणभाई भूतडिया, अभाविप गुजरात प्रदेश मंत्री समर्थ भट्ट के साथ बड़ी संख्या में सूरत के गणमान्य नागरिक शामिल हुए। समारोह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में गुजरात की लोक संस्कृति के दर्शन हुए।

समारोह में अभिनेता मनोज जोशी ने बताया कि मेरी शिक्षा एवं संगोपन संघ में हुआ है और उनके

डीएनए में केवल भारतीयता है। शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का 350 वां वर्ष पूर्ण होना सभी भारतीयों के लिए विशेष है। शिवाजी महाराज ने देश में नई ऊर्जा भरी। शिवाजी के कारण भारत के मन, संस्कृति, तत्त्व ज्ञान को विस्तार मिला। यदि राष्ट्र का निर्माण करना है तो नागरिकों में ज्ञान, शील, एकता के गुण होने चाहिए, विद्यार्थी परिषद का तो यह ध्येय वाक्य है। उन्होंने कहा कि 75 वर्षों में विद्यार्थी परिषद की ध्येय यात्रा कभी अपने पथ से नहीं डिगी।

समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने कहा कि शिक्षा की पूरी प्रक्रिया संस्कार की प्रक्रिया है। शिक्षा की परंपरा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से अभाविप का जन्म हुआ। कोई ऐसा अक्षर नहीं है जिससे मंत्र का निर्माण न हो और ऐसा कोई विद्यार्थी नहीं, जिसमें दिव्यता का गुण नहीं है। अभाविप ऐसे छात्रों की दिव्यता को निखारने का काम करते आ रही है। अभाविप की 75 वर्षों की यात्रा, छात्रशक्ति को राष्ट्रशक्ति में बदलने का संकल्प; भारतीय मूल्यों और संस्कृति को जीवन में प्रतिष्ठित करने की प्रेरणादायक यात्रा रही है। इसीलिए यह साधारण यात्रा नहीं है, बल्कि एक ध्येय यात्रा है।

समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि 1948 में जिस वंदे मातरम के साथ अभाविप का गठन हुआ था, वह आज प्रत्येक युवा की जुबान पर है। आज देश में कोई ऐसा हिस्सा नहीं है, जहां अभाविप कार्यकर्ता झंडा लेकर वंदे मातरम का जयघोष नहीं करता होगा। अभाविप वर्तमान में देशभक्ति का पर्याय बन गई है। अभाविप की यात्रा देश के हजारों युवाओं को प्रेरणा देने वाली तथा उन्हें जीवन में एक नई दिशा दिखाने वाली रही है।

पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली अपनाने का संकल्प

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से दो दिन पहले एक-दिवसीय केंद्रीय कार्यसमिति बैठक हुई। बैठक में 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्यों ने पर्यावरण क्षेत्र में योगदान करने तथा पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली अपनाने की संकल्प लिया।

बैठक के उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने कहा कि भारत का लोकतंत्र निरंतर समृद्ध तथा सशक्त होकर पूरे विश्व को एक सकारात्मक दिशा दिखा रहा है और भारत लोकतंत्र की जननी है। इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों की सक्रिय सहभागिता से देश में एक सकारात्मक वातावरण उत्पन्न हुआ है। आधुनिक भारत की सशक्तता, बंधुत्व तथा समानता जैसे श्रेष्ठ मूल्यों का मूल, राष्ट्र में प्राचीन समय से रहा है, जिसे निरंतर विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक मूल्यों को लोकजीवन में स्थापित करने के निरंतर महत्वपूर्ण प्रयास किए जाने चाहिए। देश में 'स्व' एवं 'स्व-बोध' आधारित व्यवस्था को आगे बढ़ाने तथा विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय मूल्य आधारित बदलाव लाने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि वर्तमान समय भारत का स्वर्णिम दौर है, भारत लक्ष्यों की पूर्ति हेतु तेज़ी से विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है। अभाविप ने देश के विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में रचनात्मक एवं आंदोलनात्मक गतिविधियों द्वारा निहित समस्याओं के निदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साथ ही शिक्षा, पर्यावरण, उद्यमिता, खेल जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अभाविप के कार्यक्रमों एवं अभियानों ने युवाओं में बदलाव लाने का प्रयास किए हैं। भारत सशक्त होकर विश्व का नेतृत्व करने के लिए निरंतर आगे बढ़ रहा है। ■

भारतीय इतिहास के वास्तविक तथ्यों को उजागर करने की आवश्यकता

■ डा. मीनाक्षी जैन

गुजरात स्थित सूरत में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में भारत के गौरवशाली प्राचीन इतिहास से जुड़े अनेक तथ्यों को प्रसिद्ध इतिहासकार डा. मीनाक्षी जैन ने सामने रखा। एक महत्वपूर्ण सत्र में अभाविप पदाधिकरियों एवं कार्यकर्ताओं के मध्य उन्होंने बताया कि भारत विश्व की एक प्राचीन सभ्यता है। तत्कालीन समय की मिश्र, यूनान जैसी प्राचीन सभ्यताओं का कोई नाम-निशान नहीं बचा है और उन सभ्यताओं के अवशेष संग्रहालय में देखे जा सकते हैं। इसके विपरीत भारत की प्राचीन सभ्यता आज भी जीवित है और भारतीय सभ्यता के मूल बिंदु को भारत के निवासियों ने आज तक नहीं छोड़ा है। पंद्रह हज़ार वर्ष पूर्व से भारतीय उन्हीं देवी-देवताओं की पूजा कर रहे हैं और भारतीय संस्कृति के सिद्धांत आज भी उसी रूप में हैं, जिन्हें भारतीयों ने कभी नहीं छोड़ा। मध्यप्रदेश में नौ हज़ार ईसा पूर्व का एक पत्थर मिला है। यह वह प्रमाण है, जो बताता है कि भारत में देवी की पूजा की जाती थी। मध्य प्रदेश में वनवासी आज भी वैसे ही पत्थर की पूजा कर रहे हैं और यह पूजा तेरह हज़ार वर्षों से हो रही है।

उन्होंने बताया कि गुजरात में सिंधु-सरस्वती सभ्यता के दौरान भगवान शिव वाली मुहर मिली है। यह उस सभ्यता काल में भगवान शिव की पूजा किए जाने का प्रमाण भी है। वहां टेराकोटा की अनेकों ऐसी छोटी-छोटी मूर्तियां मिली हैं, जो नारी के रूप में देवी पूजन के तथ्य को भी सामने रखती हैं। बड़ी संख्या में मिली छोटी-छोटी मूर्तियां यह बताती हैं कि तत्कालीन समय में लोगों के घरों में मातृ देवी की पूजा होती थी। इसी तरह पीपल पेड़ की पूजा, शंख, स्वास्तिक चिन्ह

की पूजा भारत में हजारों वर्षों से की जा रही है।

उन्होंने बताया कि भारत की प्राचीन सभ्यता ने समाज के किसी वर्ग को अलग नहीं रखा। सभी वर्गों का इस समाज को बनाने में योगदान रहा है। आंध्र प्रदेश में आरंभिक काल के मिले बौद्ध स्तूपों में शिलालेख मिले हैं, जिन पर स्तूप के निर्माण करने वाले लोगों की सूची को देखा जा सकता है। जानकर हैरत होगी कि सूची में सोने-चांदी का काम करने वाले लोगों के साथ ही चमड़े पर काम करने वाले लोगों के नाम अंकित हैं। इसका अर्थ यह भी है कि तत्कालीन समय में धार्मिक कार्यों में कोई भी अपना योगदान कर सकता था। इसी तरह मथुरा में आयागपट्ट मिले हैं। आयागपट्ट एक चौकोर शिलापट्ट होता था, जिस पर या तो एकाधिक प्रतीक बने होते थे या प्रतीकों के साथ तीर्थंकर की छोटी सी प्रतिमा बनी रहती थी। यह पूजन के उद्देश्य से स्थापित किया जाता था। मथुरा में इस तरह के कई आयागपट्ट मिले हैं। इनमें से 95 प्रतिशत आयागपट्ट के लिए समाज के हर वर्ग की महिलाओं

ने अपना योगदान दिया। आयागपट्ट में योगदान करने वाली महिलाओं के नाम भी हैं। इसी प्रकार सांची स्तूप को प्रारम्भ में अशोक ने बनाया था और वह बहुत छोटा सा स्तूप था। अशोक के सौ वर्ष के बाद सांची स्तूप को पुनः बनाया गया, जो पहले से बहुत बड़ा था। सांची में 631 शिलालेख मिले हैं, जिनमें से केवल तीन शिलालेख में राजा या रानी के बारे में जानकारी मिलती है। अन्य शिलालेखों में स्तूप के निर्माण में योगदान करने वालों के नाम हैं। योगदान करने वालों में साधारण मजदूर से लेकर समाज के हर वर्ग के लोगों के नाम हैं। इससे समाज में कथित रूप से ब्राह्मणों के वर्चस्व होने सम्बन्धी दावों का झूठ भी सामने आता है। यह शिलालेख वामपंथी इतिहासकारों के आरोपों और दावों का खंडन करने के लिए काफी हैं।

विदेशी एवं वामपंथी इतिहासकारों पर प्रश्न उठाते हुए उन्होंने कहा कि हमको अपने अतीत के बारे में सच्चाई जाननी चाहिए और जो गलत बताया जा रहा है, उसका प्रमाणों के साथ खंडन करना चाहिए। सातवीं शताब्दी से पहले भारत के काफ़ी हिस्सों में विदेशियों का राज था। विदेशी आक्रमण सातवीं शताब्दी से हुए, ऐसा नहीं है। उत्तर-पश्चिमी भारत में बहुत से विदेशी वंश बाहर से आए थे, जिनसे जुड़े हुए तथ्य उपलब्ध हैं। जो वंश बाहर से आया, उसने अपने तौर-तरीके या धार्मिक भावनाओं को स्थानीय निवासियों पर थोपने की कोशिश नहीं की, बल्कि उन्होंने भारत की धार्मिक विचारधारा को अपनाया। कुछ बौद्ध बन गए, कुछ विष्णु भक्त बन गए और कुछ जैन भी बन गए। मथुरा में शासन करने वाला शाक्य वंश भी विदेशी था। उन्होंने भी कई मूर्तियों का निर्माण कराया। भारत में सातवीं सदी से पहले राजनीतिक शक्ति बहुत से वर्गों के पास थी और किसी भी वर्ग ने अन्य वर्ग पर अपने धार्मिक विचार लोगों पर थोपने की कोशिश नहीं की। इसी तरह हूण एक खूंखार समूह था, जिसने भारत आने से पहले हर जगह तबाही मचाई। भारत में भी उन्होंने काफ़ी उथल-पुथल की, लेकिन अंतिम हूण शासक मिहिरकुल ने भारतीय संस्कृति को स्वीकार कर लिया। ग्वालियर के पास अलेक्जेंडर कनिंघम को मिले पांचवीं सदी के एक शिलालेख से से पता चलता है कि मिहिरकुल ने भगवान शिव के सामने सिर झुकाया था।

उन्होंने बताया कि विश्व में पहला सांस्कृतिक या राष्ट्रीय गान या सभ्यता गीत अथर्ववेद में मिलता है। इसमें कवि इस भूमि के प्रति कितनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कह रहा है कि इस भूमि ने कभी किसी के साथ सौतेला व्यवहार नहीं किया। जो भी आया, उसने सबको माता की तरह प्रेम दिया है। माता अपने बच्चों के साथ जिस तरह भेदभाव नहीं करती, इस भूमि ने भी किसी के साथ भेदभाव नहीं किया है। जब आप यहां पर बस गए, तब आप यहां के हो गए। महमूद गज़नवी के साथ आए अल-बेरुनी ने एक बहुत प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा है, 'उल-हिन्द'। उसने तत्कालीन समय की स्थितियों को लेकर लिखा था कि हिन्दू जैसे लोग कही नहीं है और न ऐसा कोई राष्ट्र है।

उन्होंने कहा कि सातवीं शताब्दी में भारत के इतिहास का एक बहुत अहम युग आरंभ होता है। अरब में एक नए पंथ का जन्म होता है और यह नया पंथ सौ वर्ष के अंदर भारत के साथ यूरोप में फ्रांस और पुर्तगाल तक फ़ैल जाता है। प्राचीन पर्शियन सभ्यता, सीरियन सभ्यता, कुछ भी उसके सामने नहीं टिक पाता। इसके साथ ही बड़े पैमाने पर मत परिवर्तन होता है। अरब से आई सेना का सबसे पहले आगमन सिंध में हुआ। अरब की जो सेना ईरान, इराक, सीरिया इत्यादि सबको जीत गई थी, उसे एक छोटे से सिंध ने पचहत्तर वर्ष तक रोका। सिंध के राजा दाहिर और उनके परिवार ने देश को सुरक्षित रखने के लिए कई बलिदान दिए। अरब सेना के वापस जाते ही राजा दाहिर, जिनका मत परिवर्तन करा दिया गया था, ने पुनः हिन्दू धर्म में वापसी कर ली। सिंध प्रसिद्ध था सूर्य मंदिर के लिए। यह सूर्य मंदिर मुल्तान में था, जिसकी बहुत मान्यता थी। धन-धान्य से भरपूर इस मंदिर से संबंधित आखिरी विवरण सातवीं शताब्दी में भारत आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा था। सूर्य देव की मूर्ति कितने गहनों से लदी हुई है, कितनी सुंदर है, इत्यादि विवरण को उसने सामने रखा था। इसी तरह ग्यारहवीं शताब्दी में मोरक्को से आए यात्री ने लिखा कि अब भारत में लकड़ी की मूर्ति की पूजा होती है। यह हमारे इतिहास की एक बहुत महत्वपूर्ण घटना है,

जिससे पता चलता है कि हमने अपने भगवानों को कभी त्यागा नहीं, मंदिर चला गया, मूर्ति चली गई, लेकिन भगवान की पूजा नहीं छोड़ी। चाहे लकड़ी की मूर्ति का नया रूप सामने क्यों न आया हो। लकड़ी के मूर्ति होने का लाभ यह था कि जब आक्रमण होगा तो मूर्ति को तुरंत हटाया जा सकता है और आक्रमण खत्म होने के बाद मूर्ति की दोबारा पूजा की जा सकती है। फ्रांस के यात्री थेवेनोट ने भी लकड़ी की मूर्ति की पूजा होने के सम्बन्ध में लिखा है। सिंध में एक हिन्दूशाही वंश का शासन था, जिसकी राजधानी काबुल थी। उस वंश के अंतिम सदस्य की मौत के बाद अल-बेरुनी ने 'उल-हिंद' में लिखा कि अब हिन्दूशाही वंश खत्म हो गया, कोई बचा नहीं है और जो भविष्य में लोग आएंगे, वह कल्पना भी नहीं कर पाएंगे कि ऐसा वंश भी था, जिसने भारत की सीमाओं पर इतना संघर्ष किया।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के गौरव की चर्चा करते हुए डा. मीनाक्षी जैन ने कहा कि महमूद गज़नवी ने भारत पर जब हमला किया, तो एक भी मंदिर को नहीं छोड़ा, सबको नष्ट किया। उस समय के एक शिलालेख में लिखा गया है कि मैं कौन हूं? उसमें झज्जा का नाम है और कहा गया कि मैंने कृष्ण का मंदिर बनाया है। सौ वर्ष तक मथुरा के लोग, आस-पास के लोग उनको सबको पता था कि यहां कृष्ण मंदिर है, जो टूटा है। सौ वर्ष तक उनके पास हिम्मत नहीं थी या साधन नहीं थे कि दोबारा मंदिर बनाए। लेकिन सौ वर्ष के बाद वह एक मंदिर बनाते हैं। झज्जा का शिलालेख अगर हमें नहीं मिलता तो पता ही नहीं होता कि झज्जा एक इंसान था, जो इस भूमि का कितना वीर और महान पुत्र है, जिनकी याद में नमन करना चाहिए। मथुरा के इतिहास की एक कहानी बहुत विचित्र है। जब अकबर गद्दी पर था, तो उसके पुत्र जहांगीर ने बगावत कर दी थी। उसने वीरसिंह बुन्देला को खत लिखकर अकबर का सिर काटने के लिए कहा था, जिससे वह स्वयं मुग़ल बादशाह बन सके। यह घटना जहांगीर ने अपनी आत्मकथा 'तुज़क-ए-जहांगीरी' में लिखी है।

उन्होंने बताया कि दक्षिण में तत्कालीन समय में एक कविता संस्कृत में लिखी गई। यह कविता विजय नगर साम्राज्य के राजकुमार की पत्नी गंगादेवी ने लिखी, जिसका नाम है 'मधुराविजयं'। मधुरा पर सल्तनत का राज था। वह इस कविता में लिखती हैं कि देवी, मेरे पति राजकुमार कम्पाना के और मेरे सपने में आईं और कहा कि तुमको दिख नहीं रहा कि कावेरी लाल हो गई, इतना रक्त बहा है और धर्म कहीं रहा नहीं। चिदंबरम मंदिर से मृदंग की जगह जानवरों की आवाज़ें आ रही हैं। कम्पाना, उठो। धर्म को दोबारा स्थापित करो। कविता में लिखा है कि वह राजकुमार कम्पाना को धर्म की तलवार देती है। इससे समझा जा सकता है कि झज्जा के विषय में किसी को पता नहीं है और दूसरी तरफ विजयनगर साम्राज्य की राजकुमारी हैं, जिसके काल में समाज के सब वर्गों ने अपना योगदान दिया। राजकुमार कम्पाना ने दक्षिण भारत में बहुत से उन मंदिरों, जिन्हें नष्ट करके मस्जिद में बदल दिया गया था, दोबारा परिवर्तित किया। मीनाक्षी मंदिर को दिल्ली सल्तनत की सेना से बचाने के लिए पुजारियों ने शिवलिंग के आगे एक और दीवार खींच दी, जिससे शिवलिंग को नष्ट होने से बचाया गया था। देवी मीनाक्षी की मूर्ति उन्होंने गोपुरम पर चढ़ा दी थी। इससे पता चलता है कि भारत एक जीवंत सभ्यता है और इसका निर्माण आम जनमानस ने किया है। उन्होंने सदियों से इस देश की भूमि के प्रति जो श्रद्धा व्यक्त की है, उसको नमन करना चाहिए। मीनाक्षी मंदिर में आज भी दीवार के सामने जो दूसरा शिवलिंग है, उस पर तलवार के निशान देखे जा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि उत्तरी भारत में अठारहवीं शताब्दी तक कोई भी मंदिर नहीं बचा था। इतना प्रहार दुनिया में किसी और सभ्यता पर नहीं हुआ। इसके बाद भी भारतीय सभ्यता जीवित रही, लेकिन कमज़ोर हो गई। इसके बावजूद एक हज़ार वर्ष जब सत्ता नहीं थी, उस समय समाज के सभी वर्ग ने भारत के प्रति अपनी श्रद्धा और समर्पण को सामने रखा। इसलिए अब समय आ गया है जब भारत को विदेशी दृष्टिकोण से मुक्त होना चाहिए। भारत के इतिहास का अध्ययन आयातित विचारधाराओं के आधार पर नहीं किया जा सकता है। इसलिए भारत के इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से देखना होगा और उपलब्ध भारतीय प्रमाणों के आधार पर इतिहास की रचना करनी होगी, जिस इतिहास पर भारत को गर्व है। ■

परीक्षाओं के कुप्रबंधन और संस्थागत मूल्यांकन पर उठ रहे प्रश्नों का निवारण आवश्यक

देश की विभिन्न विद्यालयीन परीक्षा, उच्च शिक्षण संस्थानों की प्रवेश परीक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र की गोपनीयता भंग (पेपर लीक) होना एवं संस्थागत अनियमितताएं, कुप्रबंधन तथा परीक्षाओं में कदाचार की घटनाएं अत्यंत चिंताजनक है। परीक्षा तिथि से पूर्व कुछ छात्रों एवं अभ्यर्थियों द्वारा गैरकानूनी तरीके से प्रश्न संग्रह प्राप्त करने से परीक्षा प्रक्रिया की पारदर्शिता, शुचिता और निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो रहा है। कुछ शिक्षा माफिया द्वारा प्रश्नपत्र की गोपनीयता भंग करने के साथ-साथ परीक्षाओं में परीक्षार्थियों की जगह अन्य किसी व्यक्ति को बैठा कर भी कदाचार की घटनाओं को षड्यंत्रपूर्वक अंजाम दिया जा रहा है। कुछ राज्यों में राज्य विश्वविद्यालय या उनसे संबंधित महाविद्यालयों की परीक्षा एवं मूल्यांकन पद्धति में बार-बार बदलाव करने से भी कुप्रबंधन की घटनाएं सामने आई है।

विगत कुछ कालावधि में केंद्र एवं राज्यों के विभिन्न शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं के लगभग 44 प्रश्नपत्र, उच्च शिक्षण संस्थानों (राज्य एवं केंद्र सहित) की प्रवेश परीक्षाओं के लगभग 21, राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) की 5, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल की 4 सहित लगभग 97 प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र की गोपनीयता भंग करने की घटनाएं प्रकाश में आई हैं। साथ ही कतिपय मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन के प्रति उदासीनता और गैर जिम्मेदाराना व्यवहार भी चिंतनीय है। फलस्वरूप कड़ी मेहनत कर रहे विद्यार्थियों की शिक्षा, जीवन एवं रोजगार की संभावनाओं सहित उनके परिवार के मनोबल पर नकारात्मक असर पड़ रहा है, जिसके कारण परीक्षार्थियों में अविश्वास और असंतोष व्याप्त हो रहा है।

दूसरी ओर, शिक्षा की गुणवत्ता को निरंतर बनाए रखने के लिए संस्थागत निरीक्षण एवं मूल्यांकन हेतु उत्तरदायी राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (एनएएसी), राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनबीए) एवं राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) जैसी संस्थाओं की त्रुटिपूर्ण कार्यप्रणाली से उत्पन्न कुछ परिणामों में भ्रष्टाचार, अदक्षता एवं अव्यवहारिकता की दुर्गंध आती है। प्रत्यायन एवं गुणक्रम (रैंकिंग) के अंक संग्रह की प्रक्रिया का काम बाहरी एजेंसी के द्वारा कराए जाने से कुछ निम्नस्तर की शिक्षकों की संख्या और अधोसंरचना में कमतर संस्थाओं को भी काफी उच्च गुणक्रम प्राप्त हो रहा है, वहीं कई अपेक्षाकृत उनसे अच्छे संस्थान जहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सभी मापदंडों के अनुरूप संसाधनों की उपलब्धता है, वह गुणक्रम में पिछड़ जाते है। इससे संस्थानों में नए प्रकार के कदाचार की प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है।

अतः अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद का यह सुविचारित मत है कि परीक्षाओं की एक ऐसी पद्धति विकसित की जाए, जिसमें प्रश्नपत्र की गोपनीयता भंग होने एवं कदाचार की संभावनाएं बिल्कुल नगण्य हो। इस दिशा में केंद्र सरकार द्वारा फरवरी' 2024 में लाए गए नए कानून 'लोक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) विधेयक-2024' के अक्षरशः पालन हेतु स्वायत्त एवं स्वतंत्र केंद्रीय जांच एजेंसी बनाने की दिशा में उचित कदम उठाए जाएं, ताकि परीक्षाएं पारदर्शी ढंग से आयोजित हो सकें। प्रतियोगी परीक्षाओं में शासकीय संस्थानों को केंद्र बनाकर नियमित कर्मचारियों के द्वारा परीक्षाएं संपन्न कराई जाएं और दोषी परीक्षा एजेंसियों को चिह्नित कर उनको काली सूची में जोड़ा जाएं, जिससे उनके द्वारा भविष्य में की जाने वाली घटनाओं पर विराम लग सके। साथ ही साथ उच्च शिक्षण संस्थाओं का प्रत्यायन एनएएसी एवं गुणक्रम एनआईआरएफ द्वारा कराए जाने से प्रत्यायन एवं गुणक्रम के अंकों में भिन्नता न हो। इस निमित्त अभाविप की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद केंद्र सरकार से मांग करती है कि 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' की अनुशंसा के अनुरूप नेशनल एक्रेडिटेशन काउंसिल (एनएसी) का त्वरित गठन किया जाए, जिससे संस्थानों के प्रत्यायन एवं गुणक्रम में सुसंगतता और सत्यता परिलक्षित हो। ■

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन को दें प्राथमिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने देश की शैक्षणिक प्रणाली में सकारात्मक बदलाव के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी प्रयास के रूप में व्यापक मान्यता प्राप्त की है। इस नीति का एक प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा की विरासत को भारत की शिक्षा व्यवस्था में पुनर्स्थापित करना है। समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को बहुविषयक संस्थानों के रूप में परिवर्तित कर विश्वविद्यालयों को भारतीय विचार पद्धति के अनुकूल पाठ्यक्रम निर्माण एवं शिक्षण केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता है। यह नीति उच्च शिक्षा में तीन प्रकार के संस्थानों यथा बहुविषयक अनुसंधान गहन विश्वविद्यालय, बहुविषयक शिक्षण गहन विश्वविद्यालय और डिग्री प्रदान करने वाले बहुविषयक स्वायत्त महाविद्यालयों की अनुशंसा करती है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों को इस दिशा में त्वरित कार्यवाही करनी चाहिए।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह स्पष्ट मत है कि वर्तमान ड्रॉप-आउट अनुपात को कम करने हेतु शिक्षण की जटिलताओं को कम करते हुए छात्रों के अनुरूप शिक्षण संस्थाओं के निर्माण की आवश्यकता है। इस हेतु शैक्षणिक कार्यक्रमों में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा प्रस्तावित मल्टीपल एंट्री-मल्टीपल एग्जिट विकल्प को (Multiple Entry and Multiple Exit) शीघ्र आरंभ किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में विश्वविद्यालयों को अपनी योजनाओं को लागू करने के लिए समतुल्य क्रेडिट की एक व्यापक रणनीति विकसित करनी चाहिए, जिसमें सटीक और स्पष्ट नियम सम्मिलित हो। यह नीति अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) के क्रियान्वयन के माध्यम से अकादमिक गतिशीलता और छात्र स्वायत्तता सुनिश्चित करती है, जो समावेशी शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए क्रेडिट ट्रांसफर सिस्टम के प्रभावी तंत्र की सुविधा प्रदान करती है।

अब तक 1998 शैक्षणिक संस्थानों का एबीसी के आधार पर पंजीकरण हुआ है और इनमें से केवल 679 संस्थानों ने 2021, 2022 और 2023 का क्रेडिट डाटा अपलोड किया है। ऐसा लगता है कि अभी भी बहुत से संस्थान एबीसी के साथ पंजीकरण करने के लिए पहल नहीं कर रहे हैं। अभाविप की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद विश्व विद्यालय अनुदान आयोग से सभी शिक्षण संस्थानों द्वारा एबीसी पर पंजीकरण करने और समय पर अपना डाटा अपलोड करने की मांग करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को देश की विभिन्न मातृभाषाओं में शिक्षा और शिक्षण सामग्री को उपलब्ध कराने के लिए तथा शिक्षा प्रणाली में औपनिवेशिक प्रभाव को समाप्त करने के लिए एक सक्रिय पहल के रूप में देखा जा रहा है। शैक्षणिक सामग्री के अनुवाद की प्रक्रिया प्रारम्भ करने के लिए भाषा एवं विषय विशेषज्ञों की समितियों का गठन करना अत्यावश्यक है। राजनीतिक विरोधाभास के कारण केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल जैसे चंद राज्यों में इस परिवर्तनकारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का विरोध करने से इन प्रदेशों के विद्यार्थियों का भविष्य में शैक्षणिक परिदृश्य के मानकों में पिछड़ने का संकट प्रतीत होता है। केंद्र सरकार को इस समस्या पर त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए और सभी राज्यों में शिक्षा के मानकों में एकरूपता स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

अभाविप की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद केंद्र सरकार, राज्य सरकारों एवं विश्वविद्यालयों से आग्रह करती है कि वह शिक्षण संस्थानों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन की प्रगति का आकलन करते हुए प्रभावी रणनीति एवं संस्थागत विकास योजना विकसित करे। साथ ही, विश्वविद्यालयों द्वारा नई शिक्षा नीति क्रियान्वयन के संदर्भ में किए जा रहे प्रयासों को यूटीएसएएच पोर्टल पर उपलब्ध कराएं ताकि इस संदर्भ में किए जा रहे प्रयासों का आकलन किया जा सके। अभाविप की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद शैक्षिक परिवार के समस्त घटक विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षाविद्, अभिभावक और प्रशासनिक अधिकारियों का आह्वान करती है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन में अपनी पूर्ण सहभागिता सुनिश्चित करें। ■

शैक्षिक संस्थानों में युगानुकूल अधोसंरचना निर्माण एवं वित्तीय पोषण बने अभियान

विगत दशक में केंद्र सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में अनूठे एवं सराहनीय कदम उठाए हैं, परिणामस्वरूप उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के सकल नामांकन में वृद्धि हुई है। 2021-22 में प्रकाशित अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात 28.4 प्रतिशत हो गया है जो 2014-15 में लगभग 26.5 प्रतिशत था। उच्च सकल नामांकन के समानुपात नए उच्च शिक्षा संस्थानों को खोलने का कार्य भी तेजी से चल रहा है, जिससे विगत दशक के अंत तक महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में भी वृद्धि हुई है।

अधिकाधिक उच्च शिक्षण संस्थान स्थापित होना स्वागत योग्य है, परंतु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के प्रतिधारण (Retention) अनुपात को बढ़ाने एवं इसकी निरंतरता के लिए आवश्यक है कि नवनिर्मित महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं में अधोसंरचना की समुचित व्यवस्था की उपलब्धता हो।

वस्तुस्थिति यह है कि 2009 के बाद घोषित 22 केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से 7 विश्वविद्यालय अभी भी अस्थायी परिसरों में संचालित हो रहे हैं। इसी कालखंड में खोले गए 50 से अधिक राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में से कई संस्थानों का निर्माण अभी भी अधर में है। जिन संस्थाओं को स्थाई परिसर मिला है, वहां युगानुकूल अधोसंरचना की आवश्यकता है। 2008 के बाद खोले गए 15 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में से 12 संस्थानों का ही प्रथम चरण का निर्माण पूर्ण हुआ है। 2014 के बाद घोषित 11 राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में से 4 अभी भी अस्थायी परिसरों में संचालित हो रहे हैं। 2014 से 2019 के बीच घोषित 21 भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों में से 10 संस्थान अस्थायी परिसरों से संचालित हो रहे हैं। 2007-2016 में स्थापित 14 भारतीय प्रबंधन संस्थान में से 2 संस्थान भी अस्थायी परिसरों में संचालित हो रहे हैं। 7 अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों को भी स्थायी भवन मिलने शेष हैं। ऐसे ही भारतीय नाट्य विद्यालय के केंद्रों को भी अस्थायी परिसर मिले हुए हैं। अभी भी इन संस्थानों हेतु बजट का प्रावधान निश्चित नहीं है। यही स्थिति राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों की भी है। आज भी कुछ राज्य विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय बजट और अधोसंरचना के अभाव में किराए के भवनों में संचालित हो रहे हैं, जिससे उनकी क्षमता से अधिक नामांकन के कारण अव्यवस्था की स्थिति है। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा बढ़ती शिथिलता एवं बजट प्रावधानों के अभाव में शैक्षणिक संस्थानों में समयानुकूल सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। दशकों से स्थापित संस्थान जर्जर भवनों और चिंतनीय हालत में शैक्षणिक गतिविधियां संचालित करने हेतु विवश हैं। उन्हें भी समयानुकूल बनाने की आवश्यकता है।

देश के समस्त शैक्षणिक संस्थानों यथा राज्य एवं केंद्रीय विश्वविद्यालयों सहित अन्य उच्च शैक्षणिक संस्थानों में नवाचारों को बढ़ावा देने, नवोन्मेषी विचारों को प्रेरित करने, शिक्षा एवं उद्योग के मध्य समन्वय के साथ ही प्रयोगशालाओं, अनुसंधान सुविधाओं को सुदृढ़ करने तथा पुस्तकालय, छात्रावास, खेल मैदान एवं खेल किट, वाईफाई कैंपस सहित स्मार्ट क्लास जैसे आधुनिक तकनीक के संसाधनों की उपलब्धता भी समय की मांग है।

अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद का यह सुविचारित मत है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में तय समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अधोसंरचना एवं शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र का विकास किया जाए, जिससे इन उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों को प्रतिधारित कर उनकी वांछनीय क्षमता का विकास किया जा सके और वह उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त कर सकें। केंद्र और राज्य सरकारों से अपेक्षा है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के वित्तीय पोषण पर अतिशीघ्र विशेष ध्यान केंद्रित कर युगानुकूल व्यवस्थाएं स्थापित करने हेतु अभियान लेकर कार्य करें। ■

विकसित भारत में युवाओं की हो भागीदारी

भारत आज स्वतंत्रता के अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है। आगामी पच्चीस वर्ष के पुरुषार्थ काल में पांच प्रणों के दायित्वबोध के साथ भारत प्रगति-पथ पर अग्रसर है। इन्हीं पांच प्रणों में से प्रथमतर प्रण है- विकसित भारत का लक्ष्य। 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का यह शुभ संकल्प नित्य एवं सतत साधना से ही पूर्ण होगा। इस कल्याणकारी लक्ष्य की पूर्ति में भारत के प्रत्येक नागरिक एवं वर्ग को कर्माहुति देनी होगी। विश्व में अधिकतम युवा जनसंख्या वाले हमारे देश की युवा तरुणाई का इस देवकार्य की पूर्ति में भागीरथ प्रयास अनिवार्य है। इस दिशा में निम्नलिखित विषयों पर विकसित भारत के निर्माण में युवाओं का सहभाग अपेक्षित है।

भारत का विकास पाश्चात्य अनुभवों पर आधारित मापदंडों के अंधानुसरण की अपेक्षा भारतीय चित्त-मानस-काल पर आधारित हो। इसके लिए युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीते हुए, लोक कलाओं का सतत अभ्यास एवं परिष्कार करते हुए, परिवारजनित दायित्वों की पूर्ति एवं 'सर्वे भवतु सुखिनः' जैसे भारतीय मूल्यों को जीवंत रखना अत्यंत महत्व रखता है। प्राकृतिक संवर्धन भी पारंपरिक भारतीय जीवन-दर्शन का सहज सत्य है। प्रकृति से सामंजस्य बिठाने के लिए जनमानस को जागृत करने में युवाओं की विशेष भूमिका भी आवश्यक है।

भारत में उद्यमशीलता को बढ़ावा देते हुए एक स्वावलंबी अर्थव्यवस्था खड़ी करने में युवाओं का योगदान वांछनीय है। कौशल विकास में सहभागी होते हुए विकसित भारत के युवाओं को आधुनिक तकनीकी ज्ञान से सुशिक्षित होकर स्वदेशी को प्राथमिकता देते हुए रोजगार अभिलाषी मात्र बनने की बजाए रोजगार प्रदायक बनना होगा। सफल युवा उद्यमियों के नेतृत्व में ही भारत विविध नए क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बन सकता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से रक्षा क्षेत्र में नवोन्मेष एवं नवाचार में युवा सहभाग नए आविष्कारों को जन्म देगा। सेना एवं सुरक्षा बलों में हर स्तर पर भर्ती होने में उत्साह दिखाते हुए युवाओं से भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र को बलिष्ठ करने का आह्वान है।

विकसित भारत बनाने हेतु नशा मुक्त, सार्थक एवं स्वस्थ जीवनयापन आवश्यक है। अतः युवाओं को योग अथवा खेलों में विशेष अभिरुचि लेते हुए एक स्वस्थ, सुसंस्कृत एवं सबल समाज की स्थापना हेतु अपना उत्तरदायित्व निभाना होगा।

कृषि आधारित उद्यमी नवाचार, डिजिटल मार्केटिंग प्लेटफॉर्म, सहकारी परियोजनाएं एवं जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए विकसित भारत में विषमुक्त-पोषणयुक्त खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने में युवाओं को ही अग्रदूत बनना होगा। स्वास्थ्य क्षेत्र में जागरुकता अभियान, अनुसंधान, डिजिटल प्लेटफॉर्म, टेलीमेडिसिन सेवा, आयुर्वेदिक पद्धति एवं स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से युवा चिकित्सक, नर्स, दवा विक्रेता इत्यादि स्वास्थ्य सेवा प्रदाता विकसित भारत हेतु अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकते हैं।

विज्ञान-प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक अनुसंधान की अभूतपूर्व महत्ता को समझते हुए युवाओं को राष्ट्रोत्थान हेतु सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था परिष्करण की इस ध्येय यात्रा में उदाहरण बनकर नेतृत्व करना होगा। ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवतापूर्ण शिक्षा हेतु भी नवाचार एवं अनुसंधान में युवाओं की अहम भूमिका विकसित भारत की जड़ें सुदृढ़ करेगी। परिसरों एवं पंचायत व्यवस्था से लेकर देश की संसद तक राजनीति में सक्रिय एवं सार्थक सहभाग कर तरुण शक्ति व्यवस्था परिवर्तन की वाहक बनेगी। विदेश नीति अध्ययन पर भी विशेष ध्यान देते हुए युवा अध्येता वैश्विक पटल पर भारत के बढ़ते कद में अपनी प्रभावी भूमिका सुनिश्चित कर सकते हैं। भारतीय हितों एवं दृष्टिकोण के आधार पर वैश्विक संबंधों एवं विदेशी समाजों को समझना भी युवाओं की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

भारत की युवा-शक्ति यदि आज दायित्व-बोध से आप्लावित होकर अपने कल को सुखद एवं समृद्ध बनाने हेतु कार्य करने में सफल होती है तो भारत को 2047 से पहले ही विकसित होने से कोई ताकत नहीं रोक सकती। भारत माता पुनः अपने परमवैभवमयी आसन पर आरुढ़ होने जा रही है। अतः अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद इस पुण्यकार्य में युवाओं से अथक योगदान का आह्वान करती है। ■

नवनिर्वाचित केंद्र सरकार से जन-अपेक्षाएं

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद लोकतंत्र की जननी भारत में नवनिर्वाचित केंद्र सरकार का हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करती है। पिछली सरकार ने जन भावनाओं, राष्ट्रीय भावनाओं तथा वैश्विक शांति एवं सहयोग के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किए। सदी का एक-चौथाई हिस्सा पूर्ण होने के बाद भारत प्रगति और विकास की दिशा में अग्रसर है। विश्वगुरु बनने की यात्रा में बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने का प्रयास भी विगत कुछ वर्षों में हुआ है, परन्तु वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ते हुए विकसित और समर्थ भारत हेतु और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

अभाविप का मानना है कि भारत को 10 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ विभिन्न क्षेत्रों और नीतियों में सुधार करने के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करने होंगे। 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत उत्पादित वस्तुएं आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक हुई हैं। अतः दोनों पहलुओं के संयोजन से भारत को आर्थिक रूप से सुदृढ़ एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की आवश्यकता है। स्थानीय उद्योगों को समर्थन और व्यापारिक बाधाओं को कम करने के साथ ही स्वदेशी की ठोस नीति भी बनाना आवश्यक है, जो देश की आर्थिक संरचना एवं परम्परागत भारतीय व्यवसायों के संरक्षण में सहायक सिद्ध होगा। कृषि एवं स्थानीय उत्पाद को बाजार उपलब्ध कराने के साथ ही सरकार को एक जनपद-एक उत्पाद से आगे बढ़कर एक ब्लॉक-एक उत्पाद पर कार्य करना आवश्यक है।

अभाविप का मत है कि देश में समान नागरिक संहिता को शीघ्रातिशीघ्र लागू किया जाना चाहिए ताकि देश की विधान प्रणाली एकनिष्ठ होकर विकसित भारत की ओर प्रगतिपथ पर सहायक बने। ब्रिक्स, क्वाड, जी-20, एससीओ जैसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भूमिका, देश की विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों से आर्थिक विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा, सांस्कृतिक संपर्क और वैश्विक शांति में भारत ने सक्रिय भूमिका निभाई है, लेकिन वैश्विक व्यापार में बढ़ोत्तरी, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता के साथ-साथ पड़ोसी देशों से सामरिक संबंध बनाने के उपरांत भारत को दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते कदमों को भी रोकने हेतु ठोस कदम उठाने की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख और चीन अधिक्रांत लद्दाख को अवैध चंगुल से मुक्त कराने एवं अवैध घुसपैठ रोकने के लिए भी सरकार से नीतिगत और रणनीतिक प्रयास अपेक्षित हैं। अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के माध्यम से आने वाले नशीले पदार्थों पर रोक लगाकर सरकार को खेल, योग एवं ध्यान केन्द्रों की स्थापना और समर्थन कर महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

अभाविप का मानना है कि आर्थिक और सामाजिक तौर पर वंचित वर्गों के लिए चलाई जा रही योजनाओं से इतर वोट बैंक से प्रेरित मुफ्तखोरी वाली योजनाओं पर प्रतिबंध लगाना समय की आवश्यकता है। सभी नागरिकों के लिए, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, सुलभ और सस्ती स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित कर इनमें सुधार अत्यंत वांछनीय है। विकास की योजनाओं के क्रियान्वयन में पर्यावरण, जैव विविधता पर प्रभाव और स्थानीयता का अध्ययन अनिवार्य रूप से किया जाए, स्मार्ट सिटी परियोजनाएं आगामी सदी को ध्यान में रख कर तैयार की जाएं तथा ग्राम विकास पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। लोकसभा एवं विधानसभा के साथ-साथ राज्यसभा एवं विधानपरिषद में भी 'नारी-शक्ति वंदन अधिनियम' के तहत महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता है।

हाइड्रोजन टेक्नोलॉजी के लाभों और संभावनाओं के विषय में जन-जागरूकता फैलाने के साथ साथ अक्षय ऊर्जा स्रोतों से ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन को सभी उद्योगों में बढ़ावा देना आवश्यक है। भारत में अर्धचालक (Semiconductor) उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सरकार को स्पष्ट और अनुकूल अर्धचालक नीति बनानी चाहिए, जिसमें निवेश, अनुसंधान और विकास के लिए प्रोत्साहन सम्मिलित हो सके। देश में ड्रोन तकनीकी

को बढ़ावा देते हुए नई संभावनाओं की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के विकास के अनुरूप रचनात्मक वातावरण निर्माण से देश वैश्विक नेतृत्व की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जिसके लिए सरकार, उद्योग एवं शिक्षण संस्थानों के बीच सहयोग महत्त्वपूर्ण है। स्मार्ट एवं आधुनिक खेती, अनुसंधान एवं नवाचार तथा मूल्य संवर्धन के माध्यम से कृषि के क्षेत्र में नवाचार समय की मांग है। भविष्य में कृषि, स्वास्थ्य सेवा और शहरी योजना जैसे क्षेत्रों में अंतरिक्ष-आधारित समाधानों को एकीकृत कर अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग किया जाना चाहिए। शोध, निवेश, नवाचार, सस्ती प्रौद्योगिकी एवं साइबर सुरक्षा के साथ भारत की अंतरिक्ष ताकत को सशक्त करने और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता में वृद्धि वांछनीय है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद नवनिर्वाचित केंद्र सरकार द्वारा उपरोक्त विषयों पर सकारात्मक पहल हेतु आशान्वित है। ■

। ज्ञापन ।

समस्याओं के निराकरण के लिए अभाविप ने दिया केन्द्रीय मंत्रियों को ज्ञापन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के प्रतिनिधिमंडल ने केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी एवं केन्द्रीय कृषि, किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से अलग-अलग मुलाकात करके उन्हें छात्र-छात्राओं से जुडी समस्याओं से अवगत कराया और ज्ञापन देकर समस्याओं के निराकरण की मांग की है।

गत 2 जुलाई को अभाविप के प्रतिनिधिमंडल ने केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी से मुलाकात करके उन्हें ज्ञापन दिया। ज्ञापन के माध्यम से महिलाओं के लिए प्रोद्यौगिकी कौशल विकास और स्वरोजगार को बढ़ाने, शैक्षणिक संस्थानों में महिला विकास केंद्र खोलने, स्त्री रोग विशेषज्ञ की नियुक्ति, सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन उपलब्ध कराने, महिला एवं बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम हेतु उपाय, कामकाजी महिलाओं हेतु शहरों में हॉस्टलों का निर्माण, पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में महिलाओं पर अत्याचार और चुनाव नतीजों के बाद महिलाओं के साथ हिंसक घटनाओं को अंजाम देने वालों पर कठोरतम कार्रवाई सहित विभिन्न मांगों को पूरा करने के लिए कहा गया।

उधर कृषि शिक्षा में सुधार संबंधी विभिन्न मांगें जैसे नए शैक्षणिक संस्थान खोलने, वर्तमान के विभिन्न कृषि शिक्षा संस्थानों के बुनियादी ढांचे में सुधार, कृषि शिक्षा के मानकों में सुधार सम्बन्धी मांगों को लेकर गत 3 जुलाई को अभाविप के प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय कृषि, किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान को ज्ञापन दिया। ज्ञापन के माध्यम से अभाविप ने कृषि अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए शीघ्रता से प्रयास, कृषि विषय की पढ़ाई कर रहे विद्यार्थियों के लिए वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप अवसरों के सृजन, कृषि उच्च शिक्षा के मानकों में एकरूपता, कृषि उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए प्रयास करने जैसे बिंदु उठाए गए हैं।

अभाविप का मानना है कि देश का कृषि क्षेत्र बड़ी जनसंख्या की आजीविका का साधन है। देश में कृषि शिक्षा में शीघ्रता से सुधार, कृषि शिक्षा के लिए सभी राज्यों में उच्च गुणवत्तायुक्त शैक्षणिक संस्थानों का निर्माण जैसे विभिन्न प्रयासों की आवश्यकताओं से अभाविप प्रतिनिधिमंडल ने केन्द्रीय कृषि मंत्री को अवगत कराया है। अभाविप को उम्मीद है कि केंद्र तथा राज्य सरकारें कृषि शिक्षा तथा कृषि से संबंधित विषयों पर शीघ्रता से सुधारात्मक प्रयास करेगी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

आयुष प्रणाली पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और राज्य आरोग्य मेले का आयोजन

आयुष प्रणालियों के महत्व को प्रकाश में लाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के आयाम जिज्ञासा द्वारा आयुष प्रणालियों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन डीआरडीओ के पूर्व अध्यक्ष और रक्षा मंत्री के सलाहकार डा. जी. सतीश रेड्डी ने किया। सम्मेलन में आयुर्वेद और होम्योपैथी के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर 11 सत्र आयोजित किए गए। साथ ही विद्यार्थी जिज्ञासा सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें आयुष छात्रों को नीति निर्माताओं के साथ बातचीत करने का अवसर मिला।

सम्मेलन में आयुष क्षेत्र में भविष्य के अवसर (Future Opportunities in AYUSH sector) विषय पर भी सत्र आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों का उत्साहवर्धक सहभाग रहा। सम्मेलन में पांच प्रतियोगिताएं भी की गई, जिनमें पेपर प्रेजेंटेशन, पोस्टर प्रेजेंटेशन, फोटोग्राफी, रील निर्माण प्रतियोगिता शामिल थीं। इसमें पदवी, पदव्युत्तर और प्राध्यापक सदस्यों के साथ-साथ आयुर्वेद और होम्योपैथी क्षेत्र के चिकित्सकों ने हिस्सा लिया।

जानकारी हो कि अभाविप का जिज्ञासा आयाम आयुष क्षेत्र के लिए विभिन्न छात्र-उन्मुख गतिविधियों के लिए कार्य कर रहा है। विशेष बात यह है कि आयुष छात्रों द्वारा ही इन गतिविधियों का प्रबंधन किया जाता है। महाराष्ट्र स्थित नासिक में जिज्ञासा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन गत 13 और 14 जून को महाकवि कालीदास कला मंदिर में किया गया। सम्मेलन में देश के 1300 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में स्वर्गीय एल. महादेवन प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें आयुष प्रणालियों की विधिक जानकारी के साथ ही नासिक नगर की जानकारी प्रदर्शित की गई। सम्मेलन के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भरतनाट्यम, कथक के माध्यम से भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित किया गया। सम्मेलन के साथ ही जिज्ञासा और आयुष मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से राज्य आरोग्य मेला-2024 का आयोजन

भी किया गया। मेले में 40 से भी अधिक आयुष भागीदारों के स्टॉल्स लगाए। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन और राज्य आरोग्य मेले में वैद्य मनोज नेसरी (सलाहकार,आयुष मंत्रालय), वैद्य मिलिंद निकुंभ (कुलगुरु, महाराष्ट्र आरोग्य विज्ञान विद्यापीठ, नासिक) सहित कई अन्य लोग उपस्थित रहे।

कुशल वैद्य इंटर्नशिप कार्यक्रम का आयोजन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के जिज्ञासा आयाम ने जबलपुर महानगर में कुशल वैद्य इंटर्नशिप कार्यक्रम के दूसरे सत्र का आयोजन किया। इस सत्र का शुभारंभ मुख्य वक्ता वैद्य अनुज जैन, राष्ट्रीय आयुर्वेद अनुसंधान के पूर्व निर्देशक वैद्य शंकर राव, प्राचार्य डा. एल. एल.अहिरवाल ने किया। मुख्य वक्ता वैद्य अनुज जैन ने आयुर्वेद के छात्र-छात्राओं को आत्ययिक चिकित्सा की जानकारी दी। महाकोशल प्रांत जिज्ञासा संयोजक रोहित दुबे ने बताया कि इस इंटर्नशिप के माध्यम से आयुष के छात्रों को वरिष्ठ एवं अनुभवी वैद्याचार्यों के मार्गदर्शन में उपचार के विविध आयाम सीखने मिल रहे हैं। कार्यक्रम में अभाविप के प्रदेश संगठन मंत्री विपिन गुप्ता, प्रदेश मंत्री माखन शर्मा, जिज्ञासा आयाम के राष्ट्रीय संयोजक आदर्श रावत, प्रांत जिज्ञासा संयोजक रोहित पांडेय सहित बड़ी संख्या में आयुर्वेद के विद्यार्थी उपस्थित रहे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

अभाविप की संकल्पित भारत भक्ति यात्रा

■ डा. राजशरण शाही

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने इसी वर्ष अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे किए हैं। किसी भी संगठन का अपने अमृत महोत्सव वर्ष में प्रवेश करना एक बड़ी उपलब्धि होती है। यह उपलब्धि तब और महत्वपूर्ण हो जाती है, जब 75 वर्ष की यह यात्रा सृजन, संघर्ष, साधना, समाधान तथा लोक विश्वास के पैमाने पर प्रतिमान गढ़ते हुए आगे बढ़ी हो। इसीलिए अभाविप की इस यात्रा को ध्येय यात्रा का नाम दिया जाता है। अभाविप की यात्रा का जब विश्लेषण करते हैं, तो ध्यान में आता है कि यह किसी छात्र संगठन की सामान्य यात्रा नहीं, बल्कि ज्ञान, शील एवं एकता के त्रयी से संकल्पित भारत भक्ति की यात्रा है।

अभाविप ऐसे समय से छात्र शक्ति को राष्ट्र शक्ति के रूप में परिवर्तित करते हुए पूरे प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रही है, जब समाज में छात्रों के बीच नकारात्मक विभ्रम खड़ा करने का प्रयास किया जा रहा था। इस विभ्रम को तोड़ते हुए अभाविप ने 75 वर्ष में छात्र शक्ति को राष्ट्र शक्ति रूप में प्रतिष्ठित करने का कार्य किया है। छात्रों में छिपी प्रतिभा को परखने तथा समाज और राष्ट्र के प्रति उसकी जिम्मेदारी और जवाबदेही को रचनात्मक दिशा देने के लिए अभाविप ने देश में पहली बार यह नारा दिया कि छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है। यह नारा छात्र शक्ति के प्रति अटूट विश्वास को तो व्यक्त करता ही है, साथ ही यह विश्वास आज लोक विश्वास के रूप में परिवर्तित हुआ है, तो इसके पीछे अभाविप के लाखों कार्यकर्ताओं की अनवरत साधना है।

सामान्यतया हर संगठन अपने विस्तार तथा समाज के ध्यान को आकृष्ट करने के लिए लोक-लुभावन नारों को गढ़ता है, परंतु काल के प्रवाह के साथ इन नारों का उनके सांगठनिक जीवन में स्थान समाप्त होता जाता है। कथनी और करनी के इसी अंतर के कारण विश्वास का संकट उत्पन्न होता है और इस संकट का उत्तर उनके पास न होने के कारण प्रायः संगठन समाज जीवन में अपनी प्रासंगिकता खोते जाते हैं। लेकिन अभाविप ने 75 वर्ष में जितने भी नारे दिए, वह सभी नारे लोक आकर्षण का विषय होने के स्थान पर आस्था के केंद्र बने। यही कारण है कि उनके प्रति प्रतिबद्धता काल के प्रवाह के साथ कभी बाधित होती हुई नहीं दिखाई देती है। कथनी और करनी के बीच समन्वय ही इस यात्रा को विशिष्ट बनाती है।

समाज जीवन में सत्ता के प्रति बढ़ते आकर्षण के बीच एक छात्र संगठन जब यह कहता है कि सत्ता परिवर्तन नहीं, समाज परिवर्तन हमारा उद्देश्य है और सत्ता परिवर्तन के लिए संघर्ष तो करेंगे, लेकिन सत्ता में सहभाग नहीं करेंगे, तब पूरी दृढ़ता के साथ इसका पालन करता हुआ दिखाई भी देता है। 1977 में देश में निरंकुश सत्ता द्वारा जब लोकतंत्र का गला घोटने का प्रयास किया गया, तब छात्र शक्ति को संगठित कर अभाविप ने देशव्यापी संघर्ष किया। परिणामस्वरुप सत्ता परिवर्तन के माध्यम से पुनः एक बार देश में लोकतंत्र की स्थापना हुई तथा एक संविधान सम्मत सरकार का गठन हुआ। परंतु इस सरकार में सहभागिता के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए अभाविप ने यह प्रमाणित कर दिया कि उक्त नारे हमारे जीवन आदर्श को अभिव्यक्त करते हैं। वह सत्ता प्राप्ति के साधन नहीं, बल्कि वह साधना के गहनतम केंद्र है। इसीलिए वह समझौता नहीं संकल्प के विषय है। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए अभाविप ने राष्ट्रीय राजनीति को एक नई दिशा देने का कार्य किया है।

शैक्षिक परिवार की कल्पना के साथ शिक्षा के परिसरों में कार्य करना अभाविप की अनोखी विशेषता है। यह संकल्पना संस्कृति एवं संस्कारों का संरक्षण और संवर्धन करते हुए भारतीयता को समाज जीवन में प्रतिष्ठित करने की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। इसीलिए अभाविप की स्पष्ट मान्यता है कि शिक्षा

की जड़ें संस्कृति में गहराई से समाहित होनी चाहिए तथा उसकी प्रतिबद्धता विकास के प्रति होनी चाहिए। ऐसा विकास जो विद्यार्थी में जल, जमीन, जंगल तथा जानवर के संरक्षण का भाव जागृत करता हो, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के बजाय इनके मर्यादित उपयोग की प्रेरणा मिलती हो। इस प्रकार विद्यार्थी को पश्चिम की भोग वृत्ति से बचाते हुए उसे मर्यादित व्यवहार की प्रेरणा शिक्षालयों से मिले, ऐसी अपेक्षा रहती है। अतः शिक्षालयों में ज्ञान के साथ ही संस्कार के पोषण हेतु परिवार का भाव ही इस प्रकार का प्रभाव उत्पन्न कर सकता है।

शिक्षा के संदर्भ में अभाविप की स्पष्ट मान्यता है कि शिक्षा को व्यक्ति की प्रकृति तथा राष्ट्र की संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए। इसे ज्ञानात्मक विकास के साथ रचनात्मक विकास के केंद्र के रूप में कार्य करना चाहिए। शिक्षालय समाज जीवन के विषयों पर चिंता एवं चिंतन करने के केंद्र के रूप में कार्य करें, शिक्षा विद्यार्थियों के करियर के निर्माण के साथ-साथ समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाएं, समाज जीवन के प्रश्नों का उत्तर शिक्षालयों से निकलें, इसके लिए शिक्षालयों को जीवन से जोड़ने की आवश्यकता थी। अपनी 75 वर्ष की यात्रा में छात्र हितों से जुड़े विषयों पर अभाविप ने लगातार संघर्ष किया, साथ ही शिक्षालय तथा शिक्षार्थियों के अंदर सामाजिक उत्तरदायित्व की संचेतना को जागृत करने का प्रयास किया।

आज इन्हीं प्रयत्नों का परिणाम है कि अपने शैक्षिक दायित्व के साथ ही साथ सामाजिक दायित्व के प्रति भी विद्यार्थियों में प्रतिबद्धता बढ़ रही है। सामाजिक जीवन में विद्यार्थी अभाविप के प्रकल्प विकासार्थ विद्यार्थी, सेवार्थ विद्यार्थी, राष्ट्रीय कला मंच, खेलों भारत के माध्यम से समाज की समस्याओं के प्रति जागरूक हुआ है। साथ ही इन समस्याओं के समाधान के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण भी हुआ है।

अभाविप ने 75 वर्ष में केवल समस्या उठाने का कार्य नहीं किया है, बल्कि हर समस्या को समाधान तक पहुंचाने का कार्य किया है। शैक्षिक समस्याओं से लेकर समाज और राष्ट्र जीवन में आने वाली चुनौतियों पर बहुत ही गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए रचनात्मक समाधान देने का कार्य किया है। रचनात्मकता अभाविप के प्रत्येक कार्य का आधार होता है। यही कारण है कि विरोध का आधार व्यक्तिगत नहीं, बल्कि वैचारिक होता है। मतभेद की स्थिति में भी मनभेद न होना, अभाविप की कार्य पद्धति की प्रामाणिकता का परिणाम है। इसीलिए विरोधों के बीच भी हर समस्या के समाधान का मार्ग ढूंढने में अभाविप कार्यकर्ता सफल होते हैं। अभाविप का कार्य करते हुए उनके व्यक्तित्व में सामूहिकता, अनामिकता, पारदर्शिता तथा अनौपचारिकता का भाव इतना गहरा हो गया होता है कि शिक्षा की समाप्ति के पश्चात आज समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में अभाविप कार्यकर्ता अपनी इसी कार्य पद्धति के आधार पर सामाजिक परिवर्तनों को रचनात्मक दिशा देते दिखाई दे रहे हैं।

अभाविप की मान्यता है कि विचार की स्पष्टता तथा कार्यपद्धति के प्रति प्रतिबद्धता से परिवर्तनों को दिशा मिलती है। शुद्ध सात्विक प्रेम पर आधारित कार्य पद्धति से कार्य की पवित्रता तो बनी ही रहती है, कार्यकर्ताओं के बीच विश्वास का एक अटूट संबंध भी स्थापित होता है, जो उनमें जीवन पर्यंत जीवंत दिखाई देता है। दत्तोपंत ठेंगड़ी जी कहा करते थे कि कार्य की चिंता मत करो, कार्यकर्ता की चिंता करो। कार्य स्वतः हो जाएगा। गलाकाट प्रतिस्पर्धा के इस युग में एक-दूसरे के विकास के लिए अपना कंधा उपलब्ध कराने के भाव से आत्मीयता का संस्कार जन्म लेता है और इसी आत्मीयता की शक्ति के कारण विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में अभाविप ने अपनी पहचान बनाई है। यहां अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं है, बल्कि एक-दूसरे के लिए कर्तव्य की प्रेरणा अभाविप के कार्य की बड़ी शक्ति है। इसी शक्ति के आधार पर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की यह संकल्प यात्रा समाज जीवन के सभी क्षेत्र में समता और समरसता का भाव जागृत करते हुए छात्र शक्ति के रचनात्मक नियोजन हेतु प्रतिबद्ध है। आने वाले वर्षों में पंच परिवर्तन के अभियान के साथ भारत तथा विश्व के कल्याण की दिशा में और प्रभावी भूमिका के साथ अभाविप बढ़ेगी, यही इस अमृत महोत्सव का सबसे बड़ा संकल्प है। ■

(लेखक अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।)

विद्यार्थियों के लिए प्रेरक है, श्रीमद्भगवद्गीता का अर्जुन

■ संदीप जोशी

प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वशिष्ठ-श्रीराम, चाणक्य-चंद्रगुप्त, श्रीरामकृष्ण परमहंस-स्वामी विवेकानंद, स्वामी विरजानंद-स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे मनीषियों की एक विस्तृत शृंखला है। देश में गुरु एवं शिष्य, दोनों ने अपने जीवन से अनुकरणीय आदर्श सामने रखकर विश्व को प्रेरणा दी है। ऐसी गौरवशाली परम्परा वाले जीवनदर्शन एवं निर्वहन के आधार पर ही भारत विश्व गुरु के पद पर सुशोभित हुआ। पांडु पुत्र अर्जुन भी एक महान एवं अद्भुत शिष्य थे। उनका शिष्यत्व, उनका विद्यार्थीपन सभी के लिए प्रेरक एवं अनुकरणीय है।

महाभारत काल में अर्जुन ने अपने कार्यों से अपनी एक विशेष पहचान स्थापित की हैं। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण, दृढ़ प्रतिज्ञ भीष्म पितामह, सत्यवादी युधिष्ठिर एवं महा-बलशाली भीम के होते हुए भी अर्जुन पूरी महाभारत में केंद्रीय पात्र के रूप में व्याप्त है। बचपन से ही उसने स्वयं में कुछ विशेष गुणों का विकास किया, जिनके कारण वह सदैव सर्वप्रिय रहे। घर में माता कुंती का, शिष्य के रूप में गुरु द्रोण का, भाइयों में शेष चारों पांडवों का एवं भगवान श्रीकृष्ण के लिए भी वह अत्यंत स्नेहिल थे। अपने छात्र जीवन में अपनी योग्यता के बल पर वह सदैव प्रथम ही रहे। चिड़िया की आंख वाला उदाहरण सब को ध्यान में है ही, जहां अन्य विद्यार्थियों को विभिन्न दृश्य दिख रहे थे, वहीं अर्जुन की एकाग्रता केवल अपना लक्ष्य चिड़िया की आंख ही देख पा रही थी।

लक्ष्य के प्रति इतनी एकाग्रता हो, तब सफलता और श्रेय मिलता है। अर्जुन के बचपन की एक और घटना अध्ययन के प्रति उसके लगनशील होने का प्रमाण है। एक बार भीम अंधेरे में भोजन कर रहे थे। अर्जुन के मन में सहज प्रश्न आया कि जब भीम अपना प्रिय कार्य अंधेरे में कर सकते हैं, तो वह क्यों नहीं? बस यहीं से उन्होंने घने अंधकार में ध्वनि के आधार पर तीर चलाने की कला का अभ्यास किया और धीरे-धीरे शब्दभेदी बाण चलाने में विशेषज्ञता प्राप्त कर ली। विद्यार्थियों में यदि लगन हो तो वह किसी भी विद्या एवं कला में सर्वश्रेष्ठ हो सकता है, यह अर्जुन ने अपने छात्र जीवन से हमें सिखाया है। एक और उदाहरण है। एक बार आचार्य द्रोण के आश्रम में सारे शिष्य खेल रहे थे। आचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा को एकांत में चक्रव्यूह की विद्या सिखा रहे थे। नया सीखने के प्रति अर्जुन में जबरदस्त लगन एवं उत्कंठा थी। वह खेल छोड़कर आचार्य के पास सीखने पहुंच गए। गुरु के लिए वह प्रिय थे। उसकी जिज्ञासु वृत्ति को आचार्य भी मना नहीं कर सके। अर्जुन ने यह विद्या सीखी। महाभारत युद्ध के समय आचार्य द्रोण के अलावा चक्रव्यूह विद्या के दो ही पूर्ण जानकार थे- अर्जुन और अश्वत्थामा। अध्ययन और अभ्यास के प्रति जबरदस्त लगन ही विद्यार्थी को महान बनाती हैं।

अर्जुन की महानता का एक और कारण, उसका जीवन भर विद्यार्थी बने रहना भी है। वह लगातार अध्ययनरत रहा, सीखता रहा, साधना करता रहा। वनवास के समय जब शेष पांडव विविध प्रकार से वनवास अवधि व्यतीत कर रहे थे, अर्जुन ने उस समय भी नए शस्त्रों का शोध एवं निर्माण जारी रखा। नया सीखने की इतनी तीव्र उत्कंठा कि वह अन्य लोकों में गए, तपस्या की (शोध पूर्वक साधना की)। नागलोक, इन्द्रलोक से विविध अस्त्र-शस्त्र लाए तो भगवान शिव एवं ब्रह्मा की साधना कर उनसे क्रमशः पाशुपतेय अस्त्र एवं ब्रह्मास्त्र भी प्राप्त किया। धनुर्विधा में विशेषज्ञ होना, निष्णात होना, यह लक्ष्य तय कर वह लगातार उस दिशा में प्रयत्नशील रहे। एक अच्छा विद्यार्थी भी ऐसा ही होता है जो अपने लक्ष्य के प्रति सतत प्रयत्नशील रहे।

अर्जुन का यह विद्यार्थीपन कुरुक्षेत्र के मैदान में भी बना रहा। एक विद्यार्थी की तरह ही उसने सहज भाव से अपने प्रश्न, जिज्ञासाएं, आशंकाएं श्रीकृष्ण से पूछी। अर्जुन के इस विद्यार्थीपन का लाभ पूरे विश्व को मिला। श्रीमद्भगवत् गीता के रूप में ईश्वर का अमृत संदेश सम्पूर्ण विश्व को मिला जो पांच हजार से अधिक वर्ष बाद

आज भी उपयोगी है, शाश्वत है। सब जानते ही है कि गीता भगवान श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के मध्य का वार्तालाप है। श्रीमद्भगवद्गीता में शिष्य के रूप में अर्जुन ने एक अद्भुत आदर्श हमारे सामने रखा है। गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, भगवान उसे शिक्षा प्रदान करे, शिष्यत्व प्रदान करे इसके लिए विनम्रतापूर्वक आग्रह करना, गुरु के कथन पर विश्वास, पूर्ण समर्पण भाव एवं अपनी कमजोरियां स्वीकारना अर्जुन को श्रेष्ठ शिष्य बनाती है। उसने अपनी दुर्बलताओं एवं अज्ञान को छिपाया नहीं है। गीता का प्रारम्भ ही उनके द्वारा अपनी मनः स्थिति को व्यक्त करने से ही होता है। वह कहते हैं-

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे में रोमहर्षश्च जायते
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ (1.28/29)

अर्थात वह कहते हैं कि युद्ध भूमि में खड़े अपने इन बंधुओं को देखकर मेरे अंग शिथिल हो रहे हैं और मुख सूख रहा है। मेरे शरीर में कंपकंपी (कम्पन) एवं रोमांच हो रहा है, हाथ से गाण्डीव धनुष गिर रहा है और त्वचा भी बहुत जल रही है, मेरा मन भ्रमित हो रहा है और मैं खड़ा रहने में समर्थ नहीं हूं।" अपनी दुर्बलता को छिपाकर यदि अर्जुन बिना उत्साह एवं इच्छा के कर्म (युद्ध) करते तो परिणाम भी संदेहपूर्ण ही रहता। इसीलिए अर्जुन ने कमजोरी छिपाने की बजाए अपनी मनःस्थिति व्यक्त की तो उसका समाधान भी हुआ।

अर्जुन की एक और विशेषता उसकी जिज्ञासु प्रवृति है। जब तक वह संतुष्ट नही हुए, तब तक प्रश्न पूछते रहे। यहां एक बात और भी है। अर्जुन ने प्रश्न प्रसाद के लिए नहीं पूछे, कुतर्क अथवा वाग्विलास के लिए प्रश्न नहीं पूछे। उसने अपने अज्ञान को दूर करने के लिए पूरी विनम्रता से प्रश्न पूछे और श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए उत्तर को विनम्रतापूर्वक स्वीकार भी किया। अर्जुन से सीखने के लिए एक बात और भी है-उसका अटल आत्मविश्वास। गीता के पहले अध्याय के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि एक तरफ वह विचलित तो हुआ है, किंतु वह निर्भय एवं आश्वस्त है। उसके पास अटल आत्मविश्वास हैं। उसके कथन में कहीं भी हारने या मरने का डर नहीं हैं। युद्ध में एक हारता एवं एक जीतता है किंतु पूरी गीता में अर्जुन ने अपने हारने-मरने की बात नहीं की हैं, इसके विपरीत उसकी ध्वनि निकलती है "मैं शत्रु को कैसे मार सकता हूं, क्यों मार सकता हूं? उसके मन में शत्रु सेना के भयंकर संहार के बाद की स्थिति को लेकर व्यथा है। वह कहते है-

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।। (1.40)
तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥(1.37)

अर्थात अपने ही बांधवों को मारकर क्या हम सुखी होंगे? कुल का क्षय होगा, कुल धर्म नष्ट होगा, पाप बढ़ेगा, वर्णशंकर पैदा होगे, इससे पितरों की भी अधोगति होगी, इत्यादि। पहले अध्याय के श्लोक-35 से 45 तक अर्जुन के इन मनोभावों का सुंदर शब्द चित्रण है। किंतु कहीं भी उसके हारने का भाव नहीं है। हां, कुटुम्ब की रक्षा के लिए युद्ध विमुख होने की बात अवश्य कही है। स्वयं के प्रति आत्मविश्वास का ऐसा भाव हम सबमें होना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अर्जुन कुछ भ्रमित हुए, कुछ हताश हुए, थोड़े मोहित हुए और कुछ विचलित हुए। हमारे साथ भी अक्सर ऐसा ही होता है। अतः उनकी और हमारी बीमारी एक जैसी है। अतः दवा भी वही काम आएगी।

प्रत्येक कर्म किसी न किसी अपेक्षा (धन, विजय, यश इत्यादि) से ही किया जाता है किन्तु अर्जुन की यह कर्म प्रेरणा नष्ट हो गई थी। उसे राज्य, सुख, वैभव इत्यादि नही चाहिए थे। वह कहते हैं-

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च। (1.32)
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते (1.35)

अर्थात तीनों लोकों के राज्य के लिए भी मैं इन सबको मारना नहीं चाहता तो पृथ्वी के लिए कहना ही क्या। वहां किसी भी प्रकार के भौतिक सम्पन्नता के तत्व अर्जुन के कर्म की आधार भूमिका के रूप में नहीं थे। उसकी स्थार्थपरता नष्ट हो गई थी। यह स्वार्थपरता नष्ट होना तो अच्छा ही है। किंतु कर्म की प्रेरणा, कर्म की इच्छा, नष्ट नहीं होनी चाहिए। सारे स्वार्थ त्यागने के बाद कर्म की प्रेरणा ही क्या है? इसी का उत्तर देने के लिए गीता है।

अर्जुन का अपने गुरु/मार्गदर्शक के प्रति यह

आत्मसमर्पण अत्यंत महत्वपूर्ण है। अपने शिक्षक के प्रति विनम्रता, विश्वास एवं पूर्ण श्रद्धा, तीन बातें शिक्षार्थी के लिए आवश्यक है। ऐसा होने पर ही शिक्षा आचरण (व्यवहार) में आती है। जो शिक्षा व्यवहार में न आए, केवल पाठ्यपुस्तकों में रहे, उसकी समाज एवं जीवन के लिए कोई उपयोगिता नहीं है। विषय की स्पष्टता होने तक, विषय-वस्तु पूरी तरह समझ में आने तक परिप्रश्न (पूरक प्रश्न) पूछना चाहिए, यह भी अर्जुन सिखाते हैं। कहीं संशय हो तब भी गुरु से विषय को स्पष्ट करने के लिए कहना ही चाहिए।

गीता के तीसरे अध्याय के प्रारम्भ में ऐसी ही स्थिति बन जाती है जब अर्जुन को ज्ञान एवं कर्म में से अधिक श्रेष्ठ क्या है? यह समझ नहीं आता है तो वह उलाहने जैसे भाव से (उलाहना भी आदरपूर्वक) श्रीकृष्ण से कहते हैं-

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ (2.3)

अर्थात आप मिले-जुले वाक्यों से मेरी बुद्धि को मोहित (भ्रमित) कर रहे है। इसलिए निश्चित करके वह एक बात कहिए, जिससे मेरा कल्याण हो। इस श्लोक से तत्कालीन भारत में गुरु-शिष्य के मध्य आत्मीय संबंधों की झलक भी मिलती है। शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य आत्मीय संबंध होने चाहिए तथा बड़ी कक्षाओं में सम्बंध मैत्रीपूर्ण भी होने चाहिए। यद्यपि अर्जुन ने श्रीकृष्ण को गुरु माना, भगवान माना, उन्हें सर्वेसर्वा मानकर स्वयं को उनके प्रति समर्पित कर दिया, तब भी श्रीकृष्ण उन्हें मित्र कहकर ही संबोधित करते रहे। यह अच्छे शिक्षक की विशेषता है। विद्यार्थी आदेशपूर्ण व्यवहार अथवा तानाशाही के स्थान पर मित्रतापूर्ण व्यवहार से जल्दी सीखते हैं। इस प्रकार गीता का भी संदेश है कि गुरु-शिष्य संबंध मधुर-आत्मीय होने चाहिए।

भगवद्गीता वास्तव में भारतीय शिक्षा शास्त्र का महान ग्रंथ है। गीता की विषयवस्तु, दर्शन एवं तत्व तो अद्भुत है ही, उसे कहने की शैली भी अनुकरणीय है। विद्यार्थी को अपने प्रश्न/जिज्ञासा अपने गुरु के सामने कैसे व्यक्त करनी चाहिए, यह बताते हुए चौथे अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः। (4.34)

अर्थात ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे जानने वाले ज्ञानीजन के पास जाना चाहिए,उन्हे आदरपूर्वक प्रणाम करना चाहिए, उनकी सेवा करनी चाहिए एवं कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करना चाहिए, तब वह ज्ञानीजन ज्ञान का उपदेश देते हैं। गीता का ज्ञान एवं कर्म संदेश तो अद्भुत है ही, उसका समापन भी उतना ही अनुकरणीय एवं प्रेरक है। अच्छा शिक्षक छात्रों को पढ़ाने के बाद अवश्य पूछता है कि उन्हें समझ में आया अथवा नहीं। छात्रों को समझ में आए बिना केवल पाठ्यक्रम पूरा करवाने के लिए आगे-आगे पढ़ाते रहने में अध्यापन की सार्थकता नहीं है। अतः गीता में श्रीकृष्ण का यह अंतिम श्लोक समस्त शिक्षकों के लिए प्रेरणा वाक्य है।

भगवान श्रीकृष्ण एक आदर्श शिक्षक के रूप में अर्जुन से पूछते है कि अभी तक जो इतना समझाया वह समझ में आया भी या नहीं। वह कहते हैं-

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय ॥ (18.72)

अर्थात " हे पार्थ ! अभी जो समझाया वह तुने एकाग्रचित्त होकर सुना? और तेरा अज्ञान एवं सम्मोह नष्ट हुआ या नहीं?"

इसी प्रकार श्रीमद्भगवत गीता में अर्जुन का अंतिम श्लोक भी सारे विद्यार्थियों के लिए आदर्श, अनुकरणीय हैं। सारी बात समझ में आने के बाद अर्जुन ने स्वयं को पूरी तरह से अपने मार्गदर्शक श्रीकृष्ण के चरणों में समर्पित करते हुए कहते हैं-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वप्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ॥(18.73)

अर्थात हे अच्युत, आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और अब में आपके कहे अनुसार ही करूंगा। गुरु के प्रति यह विश्वास चाहिए, तब सफलता मिलती है और अर्जुन भी विजयी ही हुआ। इस प्रकार गीता, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए पठनीय, स्मरणीय एवं अनुकरणीय है। अर्जुन ने एक अद्भुत विद्यार्थी का जीवन चरित्र सामने रखा है। ऐसे गुरु एवं ऐसे शिष्य जहां हो, वहां विजय होनी ही है। अतः गीता के अंतिम श्लोक में संजय भी कहते है कि जहां श्रीकृष्ण एवं अर्जुन है, वहां श्री (वैभव), विजय एवम विभूति होती है।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ■

भगिनी निवेदिता व्यक्तित्व विकास शिविर का समापन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) समस्तीपुर द्वारा चलाए जा रहे बीस दिवसीय भगिनी निवेदिता व्यक्तित्व विकास शिविर का समापन 30 जून 2024 को हुआ। अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री मंत्री शालिनी वर्मा ने बताया कि व्यक्तित्व विकास शिविर के माध्यम से अभाविप छात्राओं को चारदीवार में नहीं, अपितु चारों दिशाओं में जाकर देश, समाज के उत्थान एवं व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण का काम करने का अवसर प्रदान कर रही है। अभाविप छात्राओं को शिक्षा के प्रति जागरूक कर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्यों के लिए प्रेरित करती है। अभाविप आज छात्राओं के लिए आत्मविश्वास का केंद्र बन चुकी है, जहां छात्राएं आती है तो निश्चित ही साहसी बनकर जाती है।

अभाविप उत्तर बिहार की प्रदेश उपाध्यक्ष डा. स्मिता झा ने बताया कि अभाविप प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मावकाश में छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए भगिनी निवेदिता व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन करती हैं। इस वर्ष शिविर में 348 छात्राओं ने हिस्सा लिया, जिन्हें सिलाई, कढ़ाई, संगीत, मिथिला पेंटिंग, नृत्य, ब्यूटीशियन, मेहंदी, अंग्रेजी भाषा का ज्ञान, योग, व्यक्तित्व विकास, पत्रकारिता जैसे बारह विषयों का प्रशिक्षण दिया गया।

समारोह में शिशु रोग विशेषज्ञ डा. शिमाली सिन्हा ने अभाविप को नारी सशक्तिकरण की दिशा में कार्य करने वाला संगठन बताया। उन्होंने कहा कि समारोह में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देने के साथ ही शिविर में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र रही। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

पाक पोषित आतंक से निपटने के लिए और कड़े कदम उठाए केंद्र सरकार : अभाविप

जम्मू में आम नागरिकों एवं सुरक्षा बलों पर आतंकवादियों द्वारा किए गए जानलेवा हमले की अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने निंदा करते हुए घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। अभाविप ने कहा कि लोकतंत्र के उत्सव में जम्मू-कश्मीर के लोगों की सक्रिय भागीदारी ने पाकिस्तान समर्थित आंतकी ताकतों को बैचेन कर दिया है। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि पाकिस्तान पोषित निर्मम आतंकवादियों द्वारा निर्दोष नागरिकों एवं सुरक्षाबलों पर जानलेवा हमला करना न केवल दुर्भाग्यपूर्ण एवं निंदनीय है, बल्कि देश की अस्मिता पर भी हमला है। इस प्रकार की कायरतापूर्ण घटनाओं को अंजाम देना अक्षम्य है। कठोर कदम उठाते हुए आतंकी तत्वों पर अंकुश लगाना चाहिए। अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री गुलाम मुस्तफा अली ने कहा कि आंतरिक सुरक्षा तंत्र को और अधिक कड़ा किए जाने की आवश्कता है। उन्होंने कहा कि जम्मू जैसे शांतिपूर्ण क्षेत्र में लगातार आतंकी हमला दुर्भाग्यपूर्ण है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

PAKISTAN HAS BLOCKED ITS ACCESS TO CENTRAL ASIA DISPENSING WITH THE DURAND LINE IS THE KEY

■ K. N. Pandita

The Soviet Union exploded in 1991 and its federating units called Central Asian Republics (CARs) declared their complete independence as sovereign states. Some of the neighboring Muslim countries like Saudi Arabia, Iran and Pakistan (Turkey to a lesser degree), imagining that a vacuum had taken place, rushed to the Central Asian region with their Islamic agenda. For example, Saudis distributed millions of copies of the Quran and Pakistan offered to open thousands of religious seminaries to bring true Islam to the people. However, Iran alive to sectarian limitations restricted its activities to the State of Tajikistan where it had found a sprinkling of Shia population.

But soon after understanding how ideologically and practically the CARs had been transformed into a modern, progressive and scientific societies under Soviet dispensation, they silently retracted their steps fearing that more interaction with the Central Asian societies would spell disaster to their conservatism at home. This was explained by a Tajik professor in a cryptic sentence. He said, "When we found that these Islamists were trying to stifle or throat, we cut their hand,"

PAK-TAJIK RELATIONS

According to the website of the Ministry of Foreign Affairs of Tajikistan, Pakistan established its embassy in Dushanbe on June 6, 1992. During the 31 years of diplomatic relations, Tajik President, Emomali Rahman paid eight visits to Pakistan and Pakistani Presidents and Prime Ministers have also been visiting Dushanbe to discuss bilateral relations on various subjects as a matter of routine.

CASA-1000

CASA-1000 aims to link the energy systems of Central Asia with South Asia – Kyrgyzstan, Tajikistan with Afghanistan and Pakistan – and to develop mechanisms for electricity trade in accordance with international standards. The project is expected to generate some 1,000-1,300 megawatts per year for export to Afghanistan and Pakistan.

In a broadcast of January 3, 2012, Radio Free Europe said that Tajik Ambassador to Pakistan Zubaidullo Zubaidov met with the head of the upper house of Pakistan's parliament, Fahmida Mirza, in Islamabad on January 2 to talk about the CASA 1000 project, which is backed by the Asian Development Bank and the World Bank and aims to bring electricity from hydropower plants in Kyrgyzstan and Tajikistan to Afghanistan and Pakistan.

Zubaidov said Tajikistan would like to start exporting electricity to Pakistan within the framework of CASA 1000 but is trying to complete work on the Tajik part of the project.

But the massive Roghun project has run into financial difficulties. An estimated $950 million is still required to fund the project. About 25 percent of that amount ($251 million) is needed to build power transmission lines in Tajikistan.

Hydropower is seen as having the potential to address Tajikistan's chronic power shortages, and also provide enough for export.

RENEWED ENTERPRISE

While on his way to Astana to participate in the SCO summit, Prime Minister of Pakistan, Shahbaz Sharif stopped over for a day at

Dushanbe where he held talks with the Tajik President on various bilateral issues including the Roghun project. The focus of the talks of two leaders was on the implementation part of agreements reached at during the visit of the Tajik President to Pakistan two years ago.

The Times of Central Asia of July 1 informs that Islamabad is evincing interest in speeding up the start of the CASA-1000 energy project and expanding cooperation in transport and security. Pakistan is short of about 7000 MW of electric power. In exchange, Tajikistan expresses its desire to have access to the seaports of Gwadar and Karachi of Pakistan. In December 2022, Tajik President Emomali Rahman had travelled to Islamabad where he signed eight documents at the end of negotiations with Pakistani Prime Minister.

CONNECTIVITY

Commenting on Tajik-Pak relations in historical perspective, The Times of Central Asia of July 2 quoting Alexander Vorobyov, a researcher at the Institute of Oriental Studies of the Russian Academy of Sciences and head of the Centre for Public Diplomacy wrote, "The fact is that Tajikistan's intelligence services have historically not had warm relations with Pakistan, whose intelligence services have supported various militant groups in Afghanistan. But times are changing. In addition, it should be noted that today, Pakistan is closely cooperating with China economically and politically in the same way that active cooperation between China and Dushanbe is taking place."

According to the same researcher improving relations between Tajikistan and Uzbekistan, whose authorities are actively promoting a project to create the Trans-Afghan Railway "Tirmiz-Mazar-i-Sharif-Kabul-Peshawar will help improve Tajikistan's transport connectivity with the outside world and offer the possibility of access to South Asia. The shorter route connecting Dushanbe in Tajikistan to the Indian Ocean is through Afghanistan to Karachi or Gwadar, which is approximately 2,720 kilometers while it is 3,400 kms to the Iranian port of Bandar Abbas in the Strait of Hormuz.

The 350 km-long Wakhan Corridor, a narrow strip of territory in Afghanistan's Badakhshan province separates Pakistan from Tajikistan. Experts are of the view that if Afghanistan's stability and security can be ensured, then Pakistan has the fair chances of becoming a transport hub for the countries of Central Asia. But given the Pakistan's anti-Taliban policy and obstinacy of not diluting the Durand Line, Pakistan is likely to lose the transit centrality for Central Asia.

Pakistan's interest in Central Asia essentially lies in energy. Islamabad is promoting several major transport projects in the region that will open access to global markets. However, as Hina Rabbani Khar, once Pakistan's deputy foreign minister said in February 2023 that the situation in Afghanistan is preventing Pakistan from realizing its potential in relations with Central Asia. She emphasized that the CASA-1000 project needs to be completed. The World Bank had stopped financing it after the Taliban came to power in Kabul. However, the implementation of CASA-1000 was resumed in May 2024 with the financial support of the World Bank.

TAILPIECE

Pakistan-Central Asia cooperation seems to be improving. Islamabad desires enhancing trade ties and joint economic commissions have been established. Pakistan's trade volume with Tajikistan has increased 1.6 times compared to 2022, reaching $52.7 billion, reports The Times of Central Asia of July 2. However, the paper concludes its observations with some caution. It says that "" Pakistan is a tough partner for post – Soviet countries in terms of economic relations. Big differences in terms of legislation, poverty of the majority of the population and poorly developing energy infrastructure all have an impact." ■

करगिल के सबक

■ कर्नल (सेवानिवृत्त) आर. एस. एन. सिंह

भारत आगामी 26 जुलाई को करगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है। 1999 में हुआ करगिल युद्ध, भारत के विरुद्ध पाकिस्तान द्वारा संचालित जिहादी परोक्ष युद्ध (प्रॉक्सी वार) का हिस्सा था। करगिल युद्ध में जिहादी तंज़ीमों (आतंकी संगठन) के स्थान पर पाकिस्तान की सेना ने अपने सैनिकों का इस्तेमाल किया। पाकिस्तानी सेना मुख्य रूप से एक जिहादी सेना है। ऐतिहासिक रूप से जिहादियों के चरित्र का एक विशेष पहलू यह भी रहा है कि जितना जल्दी उनमें जिहादी उन्माद चढ़ता है, उतने ही तेज़ गति से मनोबल बिखरता है। यह 1971 के युद्ध में उस समय दिखाई दिया था, जब 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया था।

जिहाद का जहर इस तरह से शरीर में फैलता है कि वह क्रूरता का रूप धारण कर लेता है। इसी क्रूरता का शिकार करगिल युद्ध में जाट रेजिमेंट के कैप्टन सौरभ कालिया बने थे। 15 मई 1999 को, जब वह अपने पांच जवानों क्रमशः अर्जुन राम, भंवरलाल बागारीया, भिका राम, मूल राम और नरेश सिंह के साथ गश्त कर रहे थे, उस समय उन्हें पाकिस्तानी सेना ने बंदी बनाया। अगले बीस दिनों तक उनको यातना दी गई। उनके पार्थिव शरीर को जब लौटाया गया तो शरीर पर दिल दहला देने वाली प्रताड़ना के चिह्न थे। उन्हें क्रूर यातना दी गई थी। ऐसी सेना को जिहादी नहीं तो क्या कहेंगे? आतंक फ़ैलाने के लिए पाकिस्तान में पलने वाले जिहादी और पाकिस्तानी सेना में ज्यादा अंतर नहीं है। करगिल युद्ध इसलिए भी अनुस्मरणीय है कि जिहादी शक्तियों के विरुद्ध अगर हम ढीले पड़ गए तो उसका कितना भयंकर अंजाम हो सकता है।

करगिल युद्ध, कश्मीर में चल रहे उस जिहादी प्रॉक्सी वॉर का एक हिस्सा था, जिसका आरम्भ पाकिस्तान बनने के तुरंत बाद ही हो चुका था। जिहादी प्रॉक्सी वॉर का एकमात्र लक्ष्य है, भारत के अंदर के सुरक्षा तंत्र और नागरिकों में दहशत फैला कर इस हद तक कमजोर करना है, जिससे भारत के अंदर ही वह नकारात्मक स्थितियां पैदा हो जाए, जिससे देश कमजोर होकर टूट जाए।

जिहादी मानसिकता वाली पाकिस्तानी सेना के अधिकारियों को यह पूरा भरोसा था कि कश्मीर में जिहादी आतंक अर्थात दहशतगर्दी से सैन्य कार्रवाई की सफलता के लिए उपयुक्त वातावरण हासिल हो चुका है यानी ज़मीन तैयार हो चुकी है। इसीलिए पाकिस्तानी सेना ने करगिल सेक्टर पर घुसपैठ करके ऊंची पहाड़ियों पर कब्ज़ा कर लिया। कब्ज़ा करने वाले पाकिस्तानी सेना की नॉदर्न लाइट इन्फेंट्री के सैनिक थे। इस कार्रवाई से श्रीनगर-लेह मुख्यमार्ग के कटने का खतरा पैदा हो गया था। पाकिस्तान सेना की योजना थी कि सैन्य कार्रवाई करते हुए पूरे जम्मू और कश्मीर (लद्दाख सहित) को भारत से अलग कर दिया जाए।

ऐसे में भारत के पास हमले के अलावा कोई विकल्प नहीं था। भारतीय सेना ने घुसपैठियों के रूप में आए पाकिस्तानी सैनिकों से भारतीय भूमि को मुक्त

करगिल से पाकिस्तानी घुसपैठियों को भगाने के लिए किया गया आपरेशन विजय लगभग बारह सप्ताह तक चला था। यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। विश्व के इतिहास में उच्च पर्वतीय क्षेत्र की कठिन स्थितियों के बीच इतना कठिन और जोखिम भरा हमला कभी नहीं हुआ था।

करने के लिए आपरेशन विजय का बिगुल फूंक दिया। परम्परागत रूप से इस क्षेत्र में गर्मियों के मौसम में सैन्य गश्त के द्वारा निगरानी रखी जाती है। अत्यंत कठिन पर्वतीय भू-क्षेत्र होने के कारण दोनों देशो ने स्थाई रूप से कभी भी अपनी सेनाओं की तैनाती यहां

नहीं की थी। ज्ञात हो कि करगिल के दूसरी तरफ, पाकिस्तान के कब्जे वाले लद्दाख का हिस्सा है, जो शिया बाहुल्य है। यहां की राजधानी स्कार्दू है, जो कारगिल से 183 किलोमीटर दूर है। नॉदर्न लाइट इन्फेंट्री के अधिकांश सैनिक इसी क्षेत्र से आते हैं। शिया होने के कारण कारगिल युद्ध के मृतक सैनिकों को पाकिस्तान ने शहीद का दर्जा नहीं दिया। यही नहीं, उनके पार्थिव शरीर को भी लेने से इंकार किया।

करगिल से पाकिस्तानी घुसपैठियों को भगाने के लिए किया गया आपरेशन विजय लगभग बारह सप्ताह तक चला था। यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। विश्व के इतिहास में उच्च पर्वतीय क्षेत्र की कठिन स्थितियों के बीच इतना कठिन और जोखिम भरा हमला कभी नहीं हुआ था।

उच्च पर्वतीय क्षेत्र में रक्षा करने वाली मोर्चाबंद सेना को बढ़त मिलती है। ऐसी स्थिति में हमलावर सेना और रक्षात्मक सेना का अनुपात 20: 1 भी कम पड़ सकता है। कूटनीतिक कारणों से यह एक सीमित युद्ध। अंतर्राष्ट्रीय सीमा या एलओसी पार करने की इजाजत नहीं थी। ऐसे में हमले की दिशा का विकल्प अत्यंत संकुचित था। मजबूरीवश, सबसे लाभदायक दिशा त्याग कर भारतीय सैनिकों को बिलकुल सामने की दिशा (फ्रंटल) से हमला करना पड़ा। ऐसे हमले आत्मघाती माने जाते हैं और बिना लक्ष्य को कमजोर किए पैदल सेना के लिए बड़े नुकसान की सम्भावना होती है। सैन्य कार्रवाई के समय लक्ष्य को तोपों और हवाई हमलों के द्वारा किया जाता है। करगिल जैसे उच्च पर्वतीय क्षेत्र में हमलावर दुश्मन सेना को बेअसर करने के लिए अत्यधिक मात्रा में तोपों की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही किए जाने वाले हवाई हमले में लंबी दूरी पर सटीक मार करने वाली परिशुद्ध-निर्देशित युद्ध सामग्री (पीजीएम) मिसाइल का प्रयोग अगर नहीं किया जाता है, तो हवाई हमलों का असर कम होता है।

ऐसी अनेकों समस्याओं के बावजूद भारतीय सेना के युवा अधिकारियों और जवानों ने अद्भुत साहस और देशभक्ति का परिचय देकर जीत हासिल की। करगिल युद्ध से भारत को कूटनीतिक परिप्रेक्ष्य में यह समझने का अवसर भी मिला कि आपात स्थिति में किस देश पर कितना भरोसा किया जाना चाहिए। युद्ध के प्रारंभिक दिनों में भारतीय सेना इसलिए हवाई हमले नहीं कर सकी क्योंकि अमेरिका ने अपने जीपीएस सेटेलाइट को प्रयोग करने की इजाजत भारत को नहीं दी थी। घटना से सबक लेने के बाद आज भारत के पास अपना जीपीएस सेटेलाइट है। करगिल युद्ध के दौरान इजरायल ने मिग- 2000 लड़ाकू विमानों के लिए लेज़र गाइडेड मिसाइल एवं ड्रोन्स की आपूर्ति की थी। यह पहला ऐसा युद्ध था जो टेलीविज़न के माध्यम से आम जनता के बीच पहुंचा। हर जीत पर ख़ुशी मनाई गई तो हर बलिदान पर आंसू भी बहाए गए थे। भारतीय सैनिकों की वीरगाथा को द्रास स्थित करगिल युद्ध स्मारक में जाकर महसूस किया जा सकता है। धन्य हैं इन वीरों के माता-पिता, धन्य हैं उनके गुरु और धन्य हैं भारतीय सेना की वह बलिदान परम्परा, जिसने ऐसे चरित्रवान वीरों को तैयार किया। ■

(लेखक भारतीय सेना के पूर्व उच्चाधिकारी एवं सुरक्षा विश्लेषक है।)

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' जुलाई 2024 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

THE IMPACT OF THREE NEW CRIMINAL LAWS IN BHARAT

Dr. Pankaj Jamtani

In contemporary India, the framework of criminal laws remains deeply rooted in legislation crafted during the colonial era under British rule. These laws, designed to govern a vastly different society, often failed to address the complexities and evolving challenges of modern times. As society progresses, new forms of crimes emerge, necessitating a legal system that is adaptive, equitable, and responsive to current realities. Therefore, there was a growing demand from different sectors for comprehensive reforms in India's criminal laws, aimed at aligning them with Bharatiya values of justice and procedural fairness. Such reforms are not merely a matter of legal modernization but are crucial for upholding the principles of justice and safeguarding the rights of all individuals in a rapidly changing social and technological landscape.

A few days ago, the Ministry of Home Affairs has announced that three new criminal laws, recently passed by Parliament in 2023, are scheduled to take effect from July 1, 2024. The introduction of these three new criminal laws i.e. Bharatiya Nyaya Sanhita, Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita and Bharatiya Sakshya Adhiniyam - marks a significant shift towards a more indigenous and culturally relevant approach to the country's legal system. These laws aim to decolonize the legal framework and incorporate a "Bharatiya" perspective, reflecting India's unique cultural, social, and historical context.

BHARATIYA NYAY SANHITA (BNS) : A TRANSITION FROM PUNISHMENT TO NYAY

The Bharatiya Nyaya Sanhita, which replaces the Indian Penal Code (IPC) of 1860, is a significant departure from the colonial-era legislation. It introduces concepts like community service as a form of punishment, acknowledging the importance of restorative justice in Indian society. The law also redefines terrorist acts and organized crime, taking into account the Bharat's specific security concerns. Moreover, it prioritizes the protection of women and children, reflecting the cultural values of respect and care for vulnerable members of society.

THE BHARATIYA SAKSHYA ADHINIYAM: ACKNOWLEDGING TECHNOLOGICAL ADVANCE

The Bharatiya Sakshya Adhiniyam, which replaces the Indian Evidence Act of 1872, recognizes electronic and digital records as evidence, acknowledging the rapid pace of technological advancements in India. This law also expands the scope of secondary evidence, reflecting the country's rich tradition of oral and written records.

THE BHARATIYA NAGARIK SURAKSHA SANHITA : A TRIAL WITH SPEEDY JUSTICE

The Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, which replaces the Code of Criminal Procedure (CrPC) of 1973, emphasizes the need for speedy justice and digital transformation in the legal system. The mandatory digital recording of statements given by sexual assault victims ensures that their testimonies are preserved with dignity and respect.

COMMUNITY SERVICE : MODERNISATION OF LEGAL REGIME UNDER NEW CRIMINAL LAWS:

Combating Love-Jihad:

In a significant move aimed at combating the issue of forced religious conversion under the garb of marriage, the Parliament has passed the Bharatiya Nyaya Sanhita Act in the year 2023. Under section 69 of this act, making sexual relations with a woman by deceitful means or under the false pretext of marriage or marrying by suppressing the identity is punishable offence for which imprisonment can be extended to 10 years and fine.

Introduction of Community Service

Bharatiya Nyay Sanhita broadens the spectrum of penalties by allowing community service as a punishment, which may be used instead of incarceration for several minor violations. Thus, prioritisation of community service, restorative justice, and the protection of vulnerable members of society, reflects the values of empathy, respect, and care that are deeply rooted in Indian culture.

Other Reforms

1. Section 103 of BNS introduced punishment for mob lynching offence.
2. Punishment for making sexual relations by using deceitful means is punishable under Section 69, BNS.
3. Offence of Sedition is replaced with a new offence for acts endangering the sovereignty, unity and integrity of India.
4. The BNS adds terrorism as an offence, it includes an act that intends to intimidate public order.
5. Forfeiture of Property introduced as a punishment for various offences.
6. Organised crime has been added as an offence.
7. Protection of Privacy and Dignity of women has been ensured under provisions.
8. Gender biased provisions, which were part of IPC has been deleted under BNS.

CONCLUSIONS

The 2023 Criminal Laws marks a groundbreaking shift in India's legal landscape, introducing sweeping changes aimed at modernizing and streamlining the nation's criminal justice framework. These three criminal laws embody a progressive, holistic, and proactive approach to tackling contemporary legal and societal issues. Emphasizing cybercrime, crimes against women, and advancements in technology, while aligning with global standards, the Act sets the stage for a just, efficient, and responsive criminal justice system in India. Its profound impact on upholding the rule of law underscores its pivotal role in ensuring equitable justice for all citizens. By incorporating indigenous principles and values, these laws aim to create a legal system that is truly "of the people, by the people, and for the people" of India. ■

छात्रों के लिए निराशा और आक्रोश का कारण बनी राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी

■ संजय दीक्षित

देश के सभी विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों के प्रवेश एवं फेलोशिप के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए गठित राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) विवादों के घेरे में हैं। एनटीए की कार्यप्रक्रिया को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे धरना-प्रदर्शन के साथ ही संसद में प्रश्न उठाए जा रहे हैं। विवाद की यह स्थिति गत मई माह में आयोजित राष्ट्रीय पात्रता एवं प्रवेश परीक्षा (नीट) यूजी के प्रश्नपत्रों के लीक होने, ग्रेस मार्क्स के कथित रूप से आवंटन एवं अन्य गंभीर अनियमितताओं के उजागर होने के बाद बनी। नीट-यूजी परीक्षा में हुई धांधली सामने आने के बाद एनटीए ने यूजीसी-नेट एवं बीएड प्रवेश परीक्षा को रद्द कर दिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए उच्चतम न्यायालय ने भी संज्ञान लेकर एनटीए और केंद्र सरकार से स्थिति को स्पष्ट करने के निर्देश दिए, तो पेपर लीक होने के साथ ही अन्य धांधली की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को सौंप दी गई।

नीट-यूजी, यूजीसी-नेट और फिर बीएड प्रवेश परीक्षा को लेकर सामने आई विवादित स्थितियों को लेकर देशभर में छात्र आक्रोश में हैं। संदेह, भ्रम एवं निराशा से जूझ रहे छात्रों के मध्य प्रश्न यह भी है कि क्या राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) एक विशेषज्ञ, स्वायत्त और आत्मनिर्भर परीक्षण संगठन के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में असफल हो गई है? जिस एजेंसी का गठन राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रवेश परीक्षा में छात्रों एवं अभिभावकों के विश्वास को बढ़ाने और मजबूत करने के उद्देश्य से किया गया था, उसकी विश्वसनीयता क्यों संदेह के घेरे में है? क्या एनटीए राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा में होने वाली धांधली एवं अनियमितता को रोकने में असमर्थ है? या फिर सुनियोजित रणनीति के तहत शिक्षा क्षेत्र में जारी सुधार प्रक्रिया को पटरी से उतारने के लिए एनटीए को निशाना बनाया गया है?

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) का गठन 2017 में किया गया था। गठन के बाद एनटीए को नीट-यूजी, नीट-पीजी, जेईई मेन, सीयूईटी-यूजी, सीयूईटी-पीजी, यूजीसी- नेट, एनसीटीई एंट्रेंस टेस्ट, सीटेट, कैट जैसी प्रवेश परीक्षाओं को आयोजित करने की जिम्मेदारी दी गई। एनटीए गठित करने के पीछे उद्देश्य यह था कि इसके माध्यम से देश भर में आयोजित होने वाली परीक्षाओं में एकरूपता आएगी। साथ ही उच्च शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय उन तत्वों पर अंकुश लगाया जा सकेगा, जो दशकों से निजी एवं व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों के क्षुद्र हितों की पूर्ति के लिए छात्रों एवं अभिभावकों का आर्थिक-मानसिक शोषण करते आ रहे थे। एनटीए का गठन होने के बाद प्रारंभिक वर्षों में राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाएं सुचारु रूप से आयोजित की जाती रही। लेकिन परीक्षाओं के बढ़ते दबाव के बीच एनटीए ने दर्जनों निजी कंपनियों से ठेके पर काम लेने की जिस रणनीति को अपनाया, उसका दुष्परिणाम प्रवेश परीक्षाओं में हुई अनियमितताओं एवं पेपर लीक के रूप में सामने आया है।

जानकर हैरत होगी कि एनटीए संगठन में प्रतिनियुक्ति पर आने वाले महानिदेशक सहित कुछ अधिकारियों की टीम के अतिरिक्त अन्य कोई स्टाफ नहीं है। सभी प्रवेश परीक्षाओं के आयोजन का पूरा दायित्व इसी टीम पर होता है और परीक्षा कराने के लिए नियुक्त होने वाली विभिन्न एजेंसियों का चयन भी यही टीम करती है। प्रवेश परीक्षा से जुड़े कार्यों के लिए एजेंसियों के चयन में गुणवत्ता के स्थान पर व्यय कम करने पर ज्यादा ध्यान देने के कारण विभिन्न राज्यों में संगठित रूप से सक्रिय नक़ल माफिया हावी होते चले गए, जिसका परिणाम रद्द हुई परीक्षाओं के रूप में देखा जा सकता है।

पिछले कई वर्षों से देश के विभिन्न राज्यों में सरकारी

भर्ती से लेकर अन्य परीक्षाओं के पेपर लीक होने, उत्तर पुस्तिका को बदलने, अयोग्य छात्रों को अधिक नंबर देकर पास करने जैसी अनेक घटनाएं सामने आ चुकी हैं। अनियमितता, धांधली एवं भ्रष्टाचार के कारण प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करने वाले आयोगों एवं संगठनों की कार्यप्रक्रिया पर गंभीर सवाल पैदा किए हैं। कई मामलों में न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद परीक्षा को रद्द करके पुनः परीक्षा का आयोजन करने से छात्रों एवं युवाओं में निराशा एवं क्रोध पैदा हुआ है। देश में होने वाली विभिन्न भर्ती परीक्षाओं में होने वाले भ्रष्टाचार एवं अनियमितताओं में कोचिंग संस्थानों की भी भूमिका उजागर हुई है। यही कारण है कि प्रतिभाशाली छात्रों के हित प्रभावित हुए हैं और उनका उत्साह एवं मनोबल टूटा है।

नीट (यूजी) परीक्षा में हुई कथित अनियमितताओं एवं पेपर लीक के मामले में केंद्रीय जांच एजेंसी (सीबीआई) एवं पुलिस ने मामला दर्ज करके उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, झारखंड, गुजरात, महाराष्ट्र सहित कई राज्यों में कार्रवाई के बाद कई आरोपियों को गिरफ्तार किया है। साथ ही परीक्षा के संचालन से जुड़े लोक सेवकों की भूमिका की भी जांच की जा रही है। जांच-पड़ताल की जारी प्रक्रिया के बीच यह प्रश्न प्रमुखता से उठाया जा रहा है कि यूजीसी-नेट परीक्षा को कंप्यूटर मोड की बजाय पेन-पेपर मोड में कराने का फैसला क्यों लिया गया? जानकारी के अनुसार यूजीसी-नेट परीक्षा का आयोजन 2018 से कंप्यूटर के माध्यम से किया जा रहा था। परीक्षाओं में होने वाली अनियमिततता एवं गड़बड़ी को रोकने के उद्देश्य से देश में कंप्यूटर आधारित परीक्षा शुरू की गई थी लेकिन अबकी बार यह परीक्षा पेन-पेपर मोड में कराई गई, जिसके कारण बड़े पैमाने पर धांधली होने के साथ ही पेपर लीक होने की घटना सामने आई। पेन-पेपर मोड़ में हुई परीक्षा के साथ ही ग्रेस अंक आधार पर हुआ छात्रों का चयन भी विवाद का एक कारण बना। नीट-यूजी परीक्षा में अबकी बार 1563 छात्रों को ग्रेस अंक मार्क्स दिए गए, जिससे उनका परिणाम अन्य छात्रों की अपेक्षा काफी बेहतर रहा। पर ग्रेस अंक पर हुए विवाद एवं उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर आयोजित पुनर्परीक्षा में 1,563 छात्रों के स्थान पर केवल 813 छात्रों ने ही हिस्सा लिया। पुनर्परीक्षा में आखिर सभी छात्रों ने हिस्सा क्यों नहीं लिया? इस प्रश्न का उत्तर किसी भी जिम्मेदार अधिकारी के पास नहीं है।

नीट के प्रश्नपत्रों के लीक होने के साथ ही अन्य गंभीर अनियमितताओं सम्बन्धी यह मामला पूरी तरह से प्रशासनिक लापरवाही से जुड़ा हुआ है। मामले के उजागर होने के बाद उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर केंद्र सरकार ने जांच भी शुरू कर दी। लेकिन एनटीए को लेकर जिस तरह से राजनीति शुरू हुई, उसके बाद प्रवेश परीक्षाओं के आयोजन में असफलता, धांधली, पारदर्शिता एवं कार्यप्रक्रिया को लेकर सड़क से लेकर संसद तक राजनीतिक दलों ने एनटीए के ख़त्म करने की मांग की। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर कथित छात्रों द्वारा तमाम दावे किए गए, लेकिन जांच के दौरान दावों की असलियत भी सामने आई। राजनीतिक दलों द्वारा सुनियोजित रूप से किए जा रहे विरोध की बीच प्रश्न यह भी उठाया जा रहा है कि नीट परीक्षा का परिणाम निर्धारित तिथि से पहले ठीक उसी दिन क्यों घोषित किया गया, जिस दिन लोकसभा चुनाव परिणाम की घोषणा होनी थी? क्या समय से पहले परिणाम की घोषणा और फिर हुए विवाद के पीछे राजनीतिक हितों की भूमिका रही? या फिर एक सोची-समझी रणनीति के तहत ऐसा किया गया?

राजनीतिक, व्यावसायिक एवं निजी हितों के कारण देश में नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा क्षेत्र में जारी सुधारों का विरोध हो रहा है। कई राज्य प्रवेश परीक्षा के आयोजन और एनटीए पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए लगातार इस व्यवस्था को रद्द करने की मांग करते आ रहे हैं। आशंका व्यक्त की जा रही है कि चुनावी वर्ष में वामपंथी एवं अंग्रेजी मानसिकता से ग्रस्त तत्वों द्वारा सुनियोजित रूप से एनटीए को निशाना बनाया गया है, जिसमें शिक्षा माफिया के साथ सरकारी एवं निजी तंत्र की भी अपनी संदिग्ध भूमिका रही। यही कारण है कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। केंद्र सरकार ने परीक्षा में कदाचार से निपटने के लिए सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम-2024 को लागू करने के साथ ही इसरो के पूर्व अध्यक्ष के. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक उच्चस्तरीय समिति का गठन भी कर दिया है। यह समिति परीक्षाओं के पारदर्शी एवं निष्पक्ष संचालन सुनिश्चित करने के लिए परीक्षा प्रक्रिया, डाटा सुरक्षा के प्रबंधों में सुधार के साथ ही एनटीए की संरचना

नीट-यूजी परीक्षा में हुई धांधली की सीबीआई जांच का अभाविप ने किया स्वागत

नीट-यूजी की परीक्षा में हुई अनियमितता के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) के विरुद्ध देशभर में धरना-प्रदर्शन करके प्रकरण की सीबीआई जांच कराने की मांग की थी। इस मांग को स्वीकार किए जाने का अभाविप ने स्वागत किया है। अभाविप का मत है कि परीक्षाओं के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की अनियमितता छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है, जिसे अभाविप कदापि स्वीकार्य नहीं करेगी। इस प्रकरण में जिम्मेदार व्यक्तियों या संस्थाओं के विरुद्ध निष्पक्ष रूप से सख्ती से कदम उठाया जाना चाहिए।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि पिछले कुछ समय से केंद्र एवं राज्य परीक्षाओं में पेपर लीक एवं अनियमितताएं चिंताजनक हैं। इससे छात्रों का भविष्य संकट में आ रहा है। इस मसले को लेकर अभाविप लंबे समय से एनटीए की कार्य प्रणाली का विरोध करते हुए सुधार की मांग करती रही है। शिक्षा संबंधी अनियमितता, छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है और यह अस्वीकार्य है। नीट यूजी परीक्षा के मामले में सीबीआई जांच कराने का फैसला स्वागतयोग्य है। साथ ही केंद्र सरकार को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि केंद्र एवं राज्य स्तर पर आयोजित किसी भी परीक्षाओं में किसी भी स्तर पर अनुचित प्रयोग एवं अनियमितता न होने पाए और इसके लिए कड़े कदम उठाने चाहिए।

अभाविप के आयाम मेडिविजन के राष्ट्रीय संयोजक डा. अभिनंदन बोकरिया ने कहा कि नीट परीक्षा परिणाम आने के बाद विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या करने के मामले अत्यंत दुखद हैं। इस मामले में उचित कार्रवाई होनी चाहिए जिससे छात्रों में परीक्षा के आयोजन को लेकर भरोसे की स्थिति बने।

जानकारी हो कि अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री डा. वीरेंद्र सोलंकी तथा शिवांगी खरवाल के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने नई दिल्ली में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मुलाकात करके एनटीए द्वारा आयोजित नीट-यूजी परीक्षा के आयोजन की प्रक्रिया एवं परिणामों में गड़बड़ी पर उठ रहे प्रश्नों की सीबीआई द्वारा जांच कराकर संलिप्त दोषियों पर शीघ्रता से कार्रवाई करने हेतु ज्ञापन सौंपा था। अभाविप प्रतिनिधिमंडल से चर्चा के दौरान केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने आश्वासन दिया था कि संबंधित विषय में किसी भी छात्र के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा और प्रकरण में जो भी दोषी पाए जाएंगे, उन पर विधिक एवं दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री डा. वीरेंद्र सोलंकी एवं शिवानी खरवाल ने कहा कि एनटीए जैसी प्रमुख परीक्षा एजेंसी द्वारा इस प्रकार की गड़बड़ी उसकी अक्षमता को दर्शाती है। ऐसे में भविष्य में कोई भी गड़बड़ी न हो, इसके लिए अभाविप एनटीए की कार्यप्रणाली को फूलप्रूफ बनाने की भी मांग करती है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

एवं कार्यप्रणाली में आवश्यक बदलाव को लेकर दो माह के अंदर अपनी रिपोर्ट देगी।

शिक्षा क्षेत्र से जुड़े विश्लेषकों का मानना है कि प्रवेश परीक्षा में होने वाली धांधली को रोकने के लिए एक ऐसी पारदर्शी व्यवस्था बनानी ही होगी, जिससे भ्रष्ट एवं दागी लोगों की किसी भी पद पर होने वाली नियुक्ति को रोका जा सके। नक़ल के लिए नई प्रौद्योगिकी के उपयोग, जिसमें प्रतिरूपण, हैकिंग एवं परीक्षा के समय इलेक्ट्रानिक उपकरणों के प्रयोग पर भी अंकुश लगाना होगा। साथ ही परीक्षा पत्रों के छपाई से लेकर परीक्षा पत्रों को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने के लिए एक ऐसी निर्धारित संचालन प्रक्रिया को अपनाना होगा, जिसमें निजी कंपनियों को ठेके पर दिए जाने वाले कार्यों के लिए कड़ी शर्तों के साथ ही प्रक्रिया के उल्लंघन पर कड़ी एवं कठोर कार्रवाई की व्यवस्था होनी चाहिए, तभी ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सकेगा। अब देखना यह होगा कि नीट-यूजी परीक्षा से जुड़ी याचिकाओं पर उच्चतम न्यायालय क्या निर्णय लेता है? ■

नरेन्द्र देव कृषि वि.वि. प्रशासन के विरुद्ध अभाविप का प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश स्थित कुमारगंज, अयोध्या में आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में आठ छात्रों पर की गई अनुचित कार्रवाई के विरुद्ध अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने प्रदर्शन करते हुए छात्रों पर की गई दंडात्मक कार्रवाई को अविलंब वापस लेने की मांग की है।

अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री अंकित शुक्ला ने बताया कि अभाविप लंबे समय से विश्वविद्यालय के कुलपति बिजेंद्र सिंह के तानाशाही कार्यों का कड़ा विरोध करती आ रही है। विद्यार्थियों पर हुई कार्रवाई को अगर वापस नहीं लिया गया तो बड़े पैमाने पर आंदोलन किया जाएगा। साथ ही गत 13 मई को आत्महत्या करने वाले छात्र यशपाल के लिए न्याय और कुलपति की तानाशाही के विरुद्ध विरोध-प्रदर्शन जारी रहेगा।

अभाविप अवध प्रांत मंत्री पुष्पेन्द्र वाजपेयी के अनुसार छात्रों का निष्कासन निंदनीय है। शोध छात्र यशपाल की आत्महत्या के बाद क्षुब्ध छात्रों द्वारा किए गए आंदोलन के बावजूद कुलपति ने दोषी शिक्षक के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई करने के स्थान पर न्याय की मांग कर रहे छात्रों को निशाना बनाया है। प्रांत मंत्री पुष्पेन्द्र ने कहा कि विश्वविद्यालय में छात्रों का शोषण हो रहा है और कृषि शिक्षा एवं कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही चुप्पी साधे हुए हैं। वह जब विश्वविद्यालय आए तो अभाविप कार्यकर्ताओं से बात करने से इंकार कर दिया। अभाविप के राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद सदस्य ऋषभ गुप्ता ने कहा कि नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और कुछ राजनीतिक हस्तियों द्वारा संरक्षित हैं। इससे शैक्षणिक संस्थान के अंदर अराजकता को बढ़ावा मिल रहा है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

। पहल ।

इंजीनियरिंग छात्रों के लिए एआइसीटीई लाई नई छात्रवृत्ति योजना

सिविल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल और केमिकल इंजीनियरिंग जैसे विषयों के विद्यार्थियों के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीई) ने एक नई छात्रवृत्ति योजना का शुभारम्भ किया है। परिषद ने यशस्वी (यंग अचीवर्स स्कालरशिप एंड होलिस्टिक एकेडमिक स्किल्स वेंचर इनीशिएटिव) नाम से नई छात्रवृत्ति योजना प्रारंभ की है, जिसका उद्देश्य इंजीनियरिंग से जुडे मूल केंद्रीय विषयों के पाठ्यक्रमों में दाखिला लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना है। छात्रवृत्ति के तहत प्रत्येक वर्ष पांच हजार विद्यार्थियों को बारह हजार रुपए से लेकर अठारह रुपए प्रदान किए जाएंगे। छात्रवृत्ति का लाभ डिग्री और डिप्लोमा की शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को मिलेगा। जानकारी के अनुसार डिग्री स्तर की शिक्षा करने वाले विद्यार्थियों को अधिकतम चार वर्षों तक प्रति वर्ष 18 हजार रुपए और डिप्लोमा स्तर के विद्यार्थियों को अधिकतम तीन वर्ष तक प्रति वर्ष 12 हजार रुपए दिए जाएंगे। यह धनराशि विद्यार्थियों को उनके बैंक खाते के माध्यम से प्रदान की जाएगी। छात्रवृति के लिए विद्यार्थियों का चयन मेरिट के आधार पर होगा। छात्रवृत्ति के लिए आवेदन ऑनलाइन किया जा सकता है।

शोधार्थियों के लिए पीडीएफ योजना

तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) ने पोस्ट डॉक्टोरल फेलोशिप (पीडीएफ) योजना आरंभ की हैं। यह फेलोशिप प्रत्येक वर्ष दो सौ शोधार्थियों को मिलेगी, जिसमें उन्हें प्रत्येक माह 65 हजार रुपए दिए जाएंगे। फेलोशिप के लिए आवेदन वर्ष में कभी भी किया जा सकेगा। फेलोशिप की अवधि प्रारंभ में एक वर्ष होगी, जिसे एक और वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है। योजना का लाभ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट, डिजाइन, प्लानिंग, अप्लाइड आर्ट्स, क्राफ्ट्स एंड डिजाइन, अप्लाइड साइंस, कंप्यूटर एप्लीकेशन, होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजी आदि क्षेत्र के शोधार्थियों को मिलेगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

विकासार्थ विद्यार्थी ने चलाया सामाजिक अनुभूति अभियान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ब्रज प्रांत में विकासार्थ विद्यार्थी के तत्वावधान में पांच दिवसीय सामाजिक अनुभूति अभियान का आयोजन किया गया। अभियान में प्रांत के सभी 14 जिलों में विभिन्न इकाइयों द्वारा सामाजिक अनुभूति 'चलो गांव की ओर' अभियान के माध्यम से नगरों में रहने वाले कार्यकर्ताओं और सामान्य छात्र-छात्राओं को ग्रामीण परिवेश से परिचित कराया गया।

गत 12 से 16 जून तक चलाए गए अभियान के विषय में ब्रज प्रांत विकासार्थ विद्यार्थी संयोजक गौरव राठौर ने बताया कि विकासार्थ विद्यार्थी जन, जानवर, जंगल, जल, जमीन के हितों के लिए कार्यरत है। सामाजिक अनुभूति जैसे अभियान के माध्यम से विकासार्थ विद्यार्थी का यह उद्देश्य रहता है कि वर्तमान समय में छात्रों को सिर्फ शिक्षा तक सीमित न रखते हुए, उन्हें समाज एवं पर्यावरण में आ रहे बदलावों की भी जानकारी दी जानी चाहिए। इस वर्ष प्रांत क्षेत्र में इस अभियान को व्यापक स्तर पर चलाते हुए लगभग 58 गांवों में जाकर कार्यकर्ताओं और सामान्य छात्रों ने ग्रामीण परिवेश को समझा और यह जाना कि हमारी मूल संस्कृति, परम्पराओं की जड़ें नगरों की तुलना में किस प्रकार आज भी गांवों में ज्यादा मजबूत हैं। सामाजिक अनुभूति जैसे

अभियान आज के समय में बहुत ही कारगर हैं। विश्वास है कि आने वाले समय में इन अभियानों से समाज में एक सुखद बदलाव आएगा और ना सिर्फ देशस्तर पर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी इसकी सराहना होगी। उन्होंने बताया कि 'सामाजिक अनुभूति-चलो गांवों के ओर' की इस पंक्ति के साथ इस अभियान को विभिन्न सोशल मीडिया हैंडल्स पर पूरे प्रांत में चलाया गया। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

। पहल ।

विधि छात्र अब कर सकेंगे इलाहाबाद उच्च न्यायालय में इंटर्नशिप

देश के राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों, केंद्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय में विधि शिक्षा लेने वाले विद्यार्थी अब इलाहाबाद उच्च न्यायालय में इंटर्नशिप कर सकेंगे। इंटर्नशिप के लिए देश के 32 विधि संस्थानों से विधि छात्रों को इसकी जानकरी देने का अनुरोध किया गया है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंटर्नशिप योजना की विस्तृत जानकारी अपनी आधिकारिक वेबसाइट www.allahabadhighcourt.in पर उपलब्ध करा दी है। योजना के तहत विधि छात्र इलाहाबाद हाईकोर्ट की प्रयागराज स्थित प्रधान पीठ या लखनऊ पीठ में इंटर्नशिप के लिए आवेदन कर सकेंगे। चयनित आवेदकों को कम से कम चार सप्ताह तक के लिए एक गैर-पारिश्रमिक इंटर्नशिप का अवसर मिलेगा। इंटर्नशिप के लिए ऑनलाइन आवेदन इंटर्नशिप आरंभ होने की प्रस्तावित तिथि से तीन माह पहले ही किया जा सकेगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक की झलकियां

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 JULY, 2024
DATE OF PUBLISHING: 8 JULY, 2024

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी के विरुद्ध अभाविप का देशव्यापी प्रदर्शन